THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY

OU_180676

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 32/R12.B Accession No. G.H. 1761

Author राधाकृष्णा।

Title भारत छोड़ो। 1941।

This book should be returned on or before the date marked below.

भारत छोड़ो

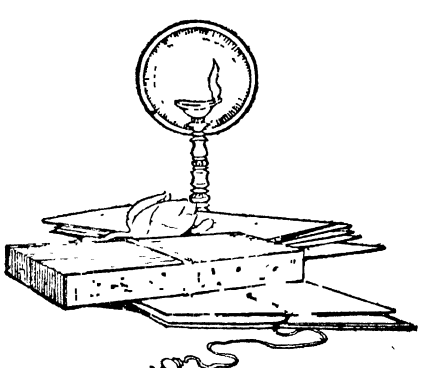

पुस्तक-जगत् का द्वितीय पुष्प

भारत छोड़ो

(एक राजनैतिक नाटक)

लेखक
श्री राधाकृष्ण

जून, १९४७

पुस्तक-जगत्
पटना

प्रकाशक—
भोलानाथ 'कमल'—शुकदेव नारायण
पुस्तक-जगत्
नया कदमकुआँ, पटना।

कॉपी राइट प्रकाशक का

मूल्य २) रुपये

मुद्रक
श्री रामेश्वर सिंह,
ओरिएंट प्रेस, पटना।

भूमिका

नाटक सभी प्रकार की कलाओं में अपना श्रेष्ठ स्थान रखता है। यदि चित्र देखिए तो वह केवल आँखों के द्वारा ही आपके मन को आकर्षित करेगा, संगीत कानों के द्वारा ही आपके हृदय को झंकृत-चमत्कृत कर सकेगा; किन्तु नाटक में ये दोनों बातें हैं। यही कारण है कि नाटक का प्रभाव मन में बड़ी गहराई से उतर जाता है। महात्मा गांधी जैसे महापुरुष सत्य के ऊपर इतना जोर पहुँचाते हैं इसके अन्दर भी उनके बचपन में देखे गए एक नाटक का प्रभाव है। मनुष्य चाहे बुद्धिजीवी हो या ठोस पत्थर का पुतला, यदि उसके पास धड़कनेवाला फास्फोरस का हृदय है, तो नाटक उसे अपने आप में तल्लीन कर लेगा। नाटक का प्रभाव मन पर आश्चर्यजनक रूप से पड़ता है।

लेकिन इधर बहुत वर्षों से सिनेमा के उद्भव तथा विकास के कारण नाटक का बहुत ह्रास हुआ है। सिनेमा में सभी प्रकार की सहूलियत है। न झंझट हैं, न पटपट। अगर मशीन ठीक है तो किसीकी खुशामद भी नहीं। और जो नाटक का प्रभाव है उससे भी बढ़िया सिनेमा का प्रभाव है!

मगर जरा रुकिए, नाटकों की अपेक्षा सिनेमा का प्रभाव हिन्दुस्तान में बढ़िया तो पाया जाता है; लेकिन हमने भी हिंदुस्तान में अच्छे अभिनय की खोज कब की है? सिनेमा से पहले जो कुछ भी हिन्दी के

स्टेज में दिखलाया जाता था उसके अभिनय का ढंग बिल्कुल पारसी था। फलतः उसका प्रभाव भी वैसा ही पड़ता था जैसा कि पड़ना चाहिये। लिखनेवालों ने भी जो कुछ लिखा सो अपनी ओर से (चाहे मामूली-घटिया ही सही) न लिख कर जहां-तहाँ से जूठन बटोर लाये और रख दिया। पं० नारायण प्रसाद 'बेताब' और राधेश्याम ने अपना रंग जरूर जमाया था; लेकिन वह जमाना ही ऐसा रहा कि कृत्रिम अभिनय का रंग धोये न धुल सका। लेखक अच्छे मिल भी जाते थे; लेकिन दिग्दर्शक (डाइरेक्टर) और अभिनेता लकीर के फकीर बने हुए थे। वे जैसा दूसरी जगह देखते थे वैसा ही अभिनय सीखते और सिखलाते थे। फलतः उत्साही लेखकों की हिम्मत टूट जाती थी। नतीजा हुआ कि नाटक देखनेवालों का शौक मिटता चला गया। आज हालत यही है कि सुप्रसिद्ध अभिनेता पृथ्वीराज कपूर के पृथ्वी थियेटर्स को छोड़ हिन्दी का कहीं कोई स्थायी रंगमंच नहीं। चालीस करोड़ हिन्दुस्तानियों के बीच हिन्दी का एक ही रंगमंच!

अंगरेजी या फ्रेंच में भी सिनेमा का खासा प्रचार है; लेकिन ऐसा तो नहीं देखा गया कि इङ्गलैंड या फ्रांस का रंगमंच ही ठंढा हो गया। आज भी वहाँ के लोग उसी चाव से नाटक देखते हैं। मेरा खयाल है कि सिनेमा के द्वारा नाटक की दिलचस्पी न कम हुई है और न हो सकती है। टेलीविजन का आविष्कार भी अभी वैसी सफलता नहीं प्राप्त कर सका है। जब तक टेलीविजन का संपूर्ण रूप से प्रचार न हो जाय तबतक कुछ कह सकना कठिन है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। बचपन में वह विद्यालय में सभी लड़कों के साथ मिलकर शिक्षा पाता है। सभा सोसाइटियों में हजार-

पाँच सौ आदमियों के साथ एकत्रित होकर वह कोई प्रस्ताव पास करता है। इसी प्रकार वह बहुत से आदमियों के साथ मिलजुल कर नाटक देखता है और उसका आनन्द उठाता है। टेलीविजन में यह बात कहाँ से? टेलीफोन के द्वारा बातचीत की सारी सहूलियत हो गई है; लेकिन अगर खास बात हुई तो आदमी मीलों रास्ता तय करके आमने-सामने ही बातें करना ज्यादा पसंद करता है।

मगर हमारा सामाजिक जीवन ही इस प्रकार का है कि उसके द्वारा नाटकों के विकास का मार्ग नहीं मिलता। स्त्री और पुरुष को हमने विभिन्न प्राणियों के समान अलग-अलग बाँट दिया है। पुरुष अलग नाटक खेलते हैं, स्त्रियाँ अलग नाटक खेलती हैं। मजा दोनों में किसी में नहीं आता। स्त्रियों के नाटक के भीमसेन गर्जन करने के बदले गोरैया चिड़ियों कीतरह चाँव-चाँव करते हैं। उनके महाराणा प्रताप अपनी मूँछ ऐंठ कर वीर-दर्प से कमर मटका कर चलते हैं तो जरा भी आनन्द नहीं आता। इसी तरह पुरुष के नाटकों की मीराबाई जब अपने गिरधर-गोपाल के आगे गाती है तो वह लोच और लहर नहीं मिलती। इधर पेशेवर नाट्य-मंडलियों में जो कुछ देखा या सुना जाता है उसमें चरित्र-हीनता की ऐसी चिराइन्ध गन्ध पाई जाती है कि जी मिचला उठता है। हमने यही साझ रखा है कि स्त्रियाँ अगर नाटक में पुरुष के साथ पार्ट करें तो बस समझ लीजिये कि वह गईं! मगर चरित्र को ऐसा कच्चा धागा मानकर चलने से काम नहीं चलेगा। वह चरित्र ही क्या जो केवल पुरुषों के साथ ड्रामा खेलने में ही नष्ट हो जाय? ऐसे तुनुक चरित्र न हमारी राष्ट्रीयता बन सकती है और न हमारी संस्कृति का ही दीप्त रूप दिखलाई दे सकता है। स्त्री और पुरुष को अलग

समाज को मान लेने से हमारा सारा विकास जहाँ का तहाँ रुका रहेगा। मजा यह है कि जहाँ की स्त्रियों को हम स्वतंत्रतापूर्वक पुरुषों से मिलते-जुलते, बातें करते, हँसते खेलते देखते हैं वहाँ के बारे में हम नीच से नीच धारणा बना लेते हैं। एक भारतीय सज्जन अमरीका पहुँचे। वहाँ की लड़कियों को फ्रॉक पहने हुए देखकर उन्होंने एक भारतीय से पूछा—ऐसी खुली पोशाक को देखकर लोगों को वासना शीघ्र ही जागृत हो जाती होगी?

वे सज्जन प्रायः १५-२० साल से अमरीका में रह रहे थे। बोले—ऐसा पहनना तो यहाँ का फैशन है। लोग रोज यही देखते हैं और सबको ऐसी ही पोशाक में देखते हैं। वासना जागृत होने का सवाल ही नहीं उठता।

मगर वे थे जो मानते ही न थे। कह रहे थे—वासना तो जागृत हो जाती होगी, साहब!

उन्होंने कहा—भारत में राजपुताने की ओर की स्त्रियाँ केवल चोली पहन कर चलती हैं, तमाम पेट और नाभि सबके सम्मुख प्रत्यक्ष रहता है; लेकिन इसे देखकर कितने आदमी वासना के शिकार होते हैं?

वासना अपने अन्दर है और अपना चरित्र भी अपने पास है। आपको ऐसा दिखलाई देता है तो इसमें दूसरे का दोष नहीं। नीला चश्मा लगाकर देखियेगा तो सभी चीजें नीली ही नीली नजर आवेंगी।

क्रमशः स्त्री और पुरुषों के अलग-अलग नाटक खेलने की परिपाटी नष्ट हो चली है। सन् १९३८ में मैं बम्बई में था। वहाँ सेंट जेवियर्स कालिज के लड़के ड्रामा का रिहर्सल कर रहे थे। लड़कियों ने कहा—वाह, तुम्हीं अकेले कैसे खेलोगे? हम भी पार्ट लेंगी।

मगर वहाँ के प्रोफेसर लोग भी इस विचार के विरुद्ध थे कि लड़कियाँ लड़कों के साथ एक ही रंगमंच पर उतरें। मगर लड़कियाँ मचल गईं और उसके आगे कालिज के अधिकारियों को झुकना ही पड़ा।

हाँ, परिपाटी टूट रही है; लेकिन इस दिशा में तनिक और भी तेजी से काम करने की आवश्यकता है।

दूसरी बात है कि पेशेवर नाटक मंडलियों के द्वारा न कला के विकास को साधन मिलता है, न हमारी राष्ट्रीयता का प्रचार होता है और न हम कोई अच्छा आदर्श जनता के सामने रख सकते हैं। पेशेवर नाटक मंडलियों का उद्देश्य है पैसा। उनकी दृष्टि वहीं तक सीमित रहती है। इस चीज के लिए तो जनता को कमर कस कर आगे बढ़ना पड़ेगा। यहाँ वहाँ, हर जगह नाटक मंडलियाँ स्थापित करनी पड़ेंगी। तब जाकर कुछ काम हो सकेगा।

मगर नाटक मंडलियों को बनाना जितना आसान है उसे दीर्घ काल तक चलाना उतना ही कठिन है। अक्सर पार्ट लेने के लिये ऐसी मुँह फुलौवल होती है कि एक नाटक के बाद दूसरे नाटक के लिये मंडली का टिक सकना ही कठिन हो जाता है। एक ही पार्ट है और पन्द्रह आदमी उसे करने को व्याकुल हैं। अगर दूसरा पार्ट दीजिये तो लेंगे ही नहीं। नतीजा होता है कि नाटक मंडली आगे बढ़ने के बदले भहरा कर बिखर जाती है। दूसरी बात है (डाइरेक्टर) निर्देशक की कमी। यों तो लोग अभिनय और निर्देशन दोनों कार्य को इतना आसान समझते हैं जिसकी हद नहीं; लेकिन जो सबसे आसान समझा जाता है वही सबसे कठिन भी है। अगर आप अभिनय करते हैं तो समझिये कि जिस पात्र का आप अभिनय करते हैं उसका चरित्र कैसा है। यह भी सोचने का कष्ट

कीजिये कि किस प्रकार की भाव-भंगो के अभिनय द्वारा हम उस चरित्र का निखरा हुआ रूप दिखला सकेंगे। निर्देशक भी ऐसे भले मिलते हैं जो सभी चरित्र को एक ही लाठी से हाँकना शुरू कर देते हैं। विविधता के सौन्दर्य की ओर उनकी दृष्टि नहीं रहती। नतीजा होता है कि अभिनय में एकरसता (monotony) आ जाती है और नाटक का सारा सौन्दर्य ही फीका पड़ जाता है। यह सब जो है सो तो है ही; लेकिन हमारे यहाँ जो सबसे बड़ी कमजोरी घुस गई है वह है अनुशासन हीनता और दलबन्दी। जिसे निर्देशक मानेंगे उसे दिल से निर्देशक नहीं मानेंगे। जिस चरित्र का अभिनय करेंगे उसे दिल से नहीं करेंगे।

हाँ, डाइरेक्टरों में भी एक बड़ी बुरी आदत होती है और उससे नाटक-मंडलियों के संगठन का बहुत बड़ा नुकसान होता है। आज एक को एक पार्ट दिया गया और परसों वही पार्ट उनसे लेकर दूसरे को दे दिया गया। उसके बाद फिर उसी पार्ट के लिये एक दूसरे आदमी आ धमके। यह बुरा है। यदि एक बार में ही आप किसीके अभिनय को नहीं परख सकते तो फिर निर्देशक बनने का हौसला ही छोड़ दीजिये। पार्ट देने के समय ही उसका चेहरा-मोहरा, शारीरिक गठन, चाल-ढाल और अभिनय को समझ लीजिये। परख लीजिये कि वह भलीभाँति उस पात्र का चरित्र उतार सकेगा या नहीं। सोच लीजिये, समझ लीजिये तब पार्ट दीजिये। एक बार फैसला कीजिये; लेकिन सोच-समझ कर फैसला कीजिये और अपने फैसले पर कायम रहिये।

सार्वजनिक नाटक-मंडलियों में बहुत से आदमियों को मिल कर एक ही साथ काम करना पड़ता है और सभी आदमियों का एक मत नहीं रहता। अतएव अनुशासन की वहाँ बड़ी भारी आवश्यकता पड़ती

है। बिना कठिन अनुशासन के सार्वजनिक नाटक मंडलियों का सफल होना कठिन है।

हमारे यहां नाटक का विकास भलीभांति नहीं हो सका इसका कारण यही है। देखनेवालों की कमी नहीं। नाटकों का शौक अभी मुर्दा नहीं हुआ। हाँ, मिलजुल कर बढ़िया नाटक खेलनेवाले ही नहीं दिखलाई देते। अगर कुछ लोगों ने हिम्मत भी की, तो प्रारंभिक कठिनाइयाँ उनके सामने रास्ता रोक कर खड़ी हो जाती हैं। वे देखते हैं कि मनोनुकूल दृश्य दिखलाने के लिये पर्दे ही नहीं मिलते। उनके बिना दृश्य अधूरा रह जाता है। अगर मनोनुकूल पर्दे बनवाये जायँ, तो नाटक के द्वारा जो एक दिन में आमदनी होती है उससे अधिक खर्च ही बैठ जाता है। मगर काम शुरू करनेवालों के सामने बराबर बाधायें आती हैं। उन बाधाओं को परास्त करने में ही बहादुरी है। बाधाओं से परास्त होकर बैठ जाने में कोई खास बात नहीं। इन आरम्भिक बाधाओं को ढकेलते हुए चलना होगा।

यों नाटक की किताबें ढेर की ढेर दिखलाई देती हैं। वे रंगमंच पर खेली भी जा सकती हैं; लेकिन उनमें तोता-रटन्त बातें हैं। एक ही प्रकार पात्रों की अवतारणा, एक ही प्रकार के अभिनय की गुंजाइश। नाम के सिवा एक नाटक और दूसरे नाटक में कोई अन्तर नहीं। खास करके इस जन-जागृति के युग में जनता को दिखलाये जाने के लायक नाटकों की बेहद कमी है। जरूरत तो इस बात की है कि हम गाँव-गाँव में राष्ट्रीय नाटक खेल कर अपनी जागृति को मजबूत बनावें। आज हम पराधीन हैं, हमारे अन्दर अनुशासनहीनता और दलबन्दी है। आज अपने दोषों को हम पराधीनता के गलेसे मढ़कर छुटकारा पा लेते हैं; लेकिन

जून १९४८ के बाद ? जब भारत आजाद हो जायगा तब हम इस दोष को किसके-किसके गले से मढ़ते फिरेंगे ? हमें अपने राष्ट्रीय-जागरण को मजबूत बनाना ही होगा। इसी दृष्टि को रख कर इस नाटक की रचना की गई थी।

१८ अक्तूबर १९४६ को यह नाटक खेला गया। उस समय मुझे भूल जाना पड़ा कि अब नाटकों के प्रति जनता का उत्साह नहीं है। राँची जैसे शहर में इस नाटक को देखने के लिये इतनी भीड़ उमड़ पड़ी जितनी कलकत्ता और बंबई के नाट्यगृहों में भी नहीं होती। दस रुपये के टिकट को लोग पच्चीस और तीस देकर खरीदने के लिये तैयार थे। राँची के सेठ राधाकृष्ण बुधिया का बनवाया हुआ हॉल आज बिहार का सबसे बड़ा हॉल है। वह हॉल खचाखच भरा हुआ था और कहीं तिल रखने की भी जगह नहीं थी। न हमारे पास अच्छे पर्दे थे और न अभिनय ही भलीभाँति तैयार हुआ था; फिर भी बिहार के शिक्षा तथा प्रचार के माननीय मंत्री आचार्य बदरीनाथ वर्मा ने इस नाटक के उद्घाटन की कृपा की थी। माननीय अनुग्रहनारायण सिंह तथा अन्य नेता भी इसे देखने के लिये आये थे। जिन्होंने देखा, पसंद ही किया और नाटकों के प्रति अपनी रुचि प्रकट की। ऐसा किसी ने भी नहीं कहा कि नाटक का युग बीत चला है और इसका अभिनय फिजूल मालूम हुआ। राँची से कूड़ा-कर्कट की तरह अंगरेजी में एक Sentinal नामक पत्र निकलता है। इस पत्र ने कस कर इस नाटक की निन्दा की; लेकिन फिर भी यह कहीं नहीं लिखा कि आज नाटक का युग नहीं है और जनता ने इसे नापसंद किया। वस्तुतः यह नाटक इतना पसंद किया गया था कि मुझे अपना परिश्रम सार्थक मालूम होने लगा। अभिनय के दूसरे ही दिन से तमाम गलियों में इसके गीत गूँजने लगे।

हाँ, इसके अभिनय में स्त्री चरित्रों का पार्ट पुरुषों के द्वारा ही अभिनीत हुआ था। कुछ लड़कियों ने उत्साह प्रकट करते हुए मुझसे कहला भेजा था कि वे भी इस नाटक में अभिनय करने को प्रस्तुत हैं। मेरे सामने तब एक विचित्र परिस्थिति पैदा हो गई। मैंने उनसे कहला दिया कि जबतक हमारे यहाँ के अभिनेतागण खुद अपने यहाँ की लड़कियों को लाकर पार्ट नहीं देते तबतक मैं उन्हें अभिनय में शामिल करने में असमर्थ हूँ। आशा है, वे मेरी इस कमजोरी को क्षमा करेंगी। अभिनय के दिन श्रीमती भानुमति (एम०ए०बी०टी०) ने जिस उत्साह से मेरे कार्यों में हाथ बटाया था उसे कभी भूला नहीं जा सकता।

इस नाटक में अनेक त्रुटियाँ हैं। कुछ त्रुटियों को मैं जानता हूँ और बहुत-सी त्रुटियाँ मुझे मालूम भी नहीं। माननीय आचार्य बदरीनाथ वर्मा ने कहा था—दूसरे अंक के बाद तीसरे अंक में घटना-क्रम इतनी तेजी से आगे बढ़ जाता है कि सिलसिला ठीक नहीं रहता।

सचमुच इस नाटक की यह कमी बेतरह खटकनेवाली है।

एक दूसरे महोदय ने बतलाया था—दूसरे अंक के अन्तिम दृश्य में गंगा को तीन-तीन गोलियाँ लगती हैं और वह मरता ही नहीं!

मगर यह तो अभिनय के समय प्रत्यक्ष दिखलाया जा चुका था। उसे पहली गोली पेट में लगती है और यकृत की बगल से छेदती हुई निकल जाती है। दूसरी गोली कन्धे में और तीसरी फिर पेट में लगती है। ऐसी अवस्था में गंगा का मर जाना ही कोई खास जरूरी नहीं मालूम होता।

साथ ही साथ नाटक लिखने के समय एक बात की ओर मेरा ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ था। एक ही लेखक के द्वारा यह कदापि सम्भव नहीं कि वह नाटकीय दृश्यों के बारे में सोचे फिर उसका कथोप-

कथन लिखे और गीत भी बना दे। इसके लिये भिन्न-भिन्न प्रतिभाओं की आवश्यकता होती है। ये कार्य भी मूल रूप में एक दूसरे से अलग हैं। अगर एक ही आदमी करे तो उसमें एक विशेष प्रकार की monotony आ जाती है। जिस प्रकार नाटक का अभिनय बहुत से लोगों के परिश्रम से सार्थक होता है उसी प्रकार नाटक की रचना में भी एक से अधिक लोगों के दिमाग लड़ाने की जरूरत है। इस नाटक में जितने गीत हैं वे दूसरों के हैं। इसके लिये मैं हंस के सम्पादक श्री अमृत राय का कृतज्ञ हूँ। अधिकांश आधुनिक गीत हंस से ही लिये गये हैं। उनके रचियता श्री त्रिलोचन शास्त्री तथा श्री केदारनाथ अग्रवाल को धन्यवाद देना मेरा कर्तव्य है।

इस नाटक को हिन्दी-संसार के सम्मुख रखते हुए मैं यह अनुभव नहीं कर रहा हूं कि मैंने हिन्दी जगत को कोई खास चीज भेंट दी है। हमारे यहाँ जनता के सम्मुख अभिनय-योग्य राष्ट्रीय नाटकों की कमी खटकती थी। और उसी दिशा में मैंने यह उद्योग किया है। नाटक मैंने कभी लिखा भी नहीं। एक मुद्दत से कहानियाँ लिखता आ रहा हूँ और वही मेरे लिये बहुत है। नाटककार होने का दावा मैं नहीं कर सकता। यह पुस्तक तो नाटक-जगत के पंकिल पथ पर पड़ी हुई ईंट की तरह है। इस पर पैर रख कर कुशल नाटककार शीघ्र आगे बढ़ सकते हैं। इतना ही इसका उद्देश्य है और मुझे मालूम है कि मैं अपने उद्देश्य में सफल हूँ।

भट्टाचार्यी लेन, राँची
१७ एप्रील, १९४७

—राधाकृष्ण

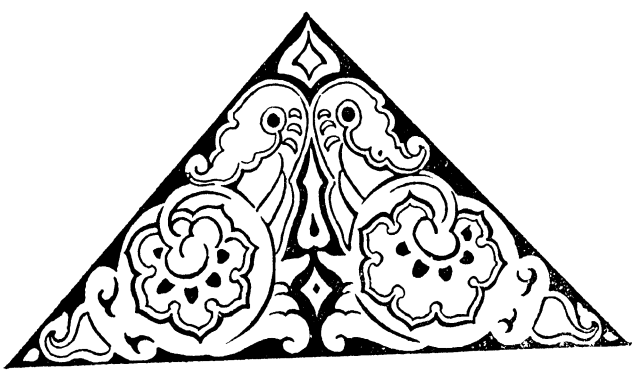

१८ अक्टूबर १९४६ को हिन्दी-नाट्य-परिषद, राँची के द्वारा अभिनीत ।

उद्घाटन कर्त्ता ··· ···आचार्य बदरीनाथ वर्मा, शिक्षा-मंत्री, बिहार-सरकार

सूत्रधार··· ···मुरलीधर शर्मा

पात्र-पात्री

अजपाल	···	··· श्री विश्वनाथ प्रसाद
रामवृक्ष सिंह...		··· श्री रामयश लाल
कामरेड अनूप···		··· श्री बालकृष्ण गुप्त
आभा	···	··· श्री पुरुषोत्तम वर्मा
नगेन्द्र	···	··· श्री के० सिंह
विद्या	···	··· श्री रामवृक्ष लाल गुप्त
नागो	···	··· श्री नगेन्द्र प्रसाद गुप्त
मनी	···	··· श्री मणिलाल गुप्त
गंगा	···	··· श्री गंगाधर शर्मा
पिरथी	···	··· श्री पृथ्वीचन्द्र चौधरी
मुनुआँ	···	··· श्री हरनाम दास पंजाबी
विलासी	···	··· श्री राम विलास

इनमें श्री विश्वनाथ प्रसाद को माननीय अर्थमंत्री श्री अनुग्रह नारायण सिंह ने एक पदक देने की कृपा की थी ।

सूचना—पेशेवर नाटक मंडलियाँ बिना लेखक की आज्ञा के इस नाटक का नहीं खेल सकतीं और न कोई फिल्म कम्पनी इसके किसी दृश्य का चित्र दिखला सकती है ।

वन्दना

जय - जय - जय हिम - शिखर - विहारी
जय नटवर, जय - जय त्रिपुरारी
तुमको ध्यावैं सब फल पावैं
परवश माता आज हमारी
हमसब आये शरण तुम्हारी

सा ग, रे प, गरे, सा, सा ग ग प प नी ध
सा नी प नी सा ग रे, ग रे सा रे सा नी ध प
ग प ध सा ध प ग प, ग रे ग रे सा ग प
ध नी सा ग प ध नी, सा ग प ध नी सा

स्वागत-गान

: कोरस :

स्वागत शुभ दिन, स्वागत विहान
मंगलमय मधुमय अवसर पर स्वागत मित्रो स्वागत श्रीमान्
अंखियन की कलियाँ तुमको पा
फूली नहीं समातीं !
अपनों के स्वागत में अपनी
पलकें आज बिछातीं !!
पुलकित तन-मन पुलकित कण-कण पुलकित जल-थल औ' आसमान

[एक दूसरा दल गाता हुआ आता है]

कैसा स्वागत कैसा यह गान ??
माता जब रोतीं जार-जार
सब ओर मचा जब हाहाकार
अन्न-वस्त्र नहीं, हम स्वतंत्र नहीं
मिट्टी में जब मिली शान

: कोरस :

माँ का दूध निभाना है
मा को आजाद बनाना है
दूर कष्ट हों, शत्रु नष्ट हों
मुख माँ का हो देदीप्यमान

१

[पर्दा उठता है। एक सादे पर्दे पर फोकस से स्टेज के भीतर चलते हुए आदमियों की परछाईं पड़ती है। आदमियों का एक कारवाँ जा रहा है। एक के पीछे दूसरा आदमी—औरत-मर्द, बच्चे-बूढ़े, नागरिक ग्रामीण—सभी भाँति के लोग जा रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे बहुत से आदमी हों। चलने की गति धीमी है; जैसे बहुत मंजिल मार चुके हों, थक गये हों, फिरभी चलना ही है; और चले जा रहे हैं। नेपथ्य में गीत चल रहा है।]

खुदाया कैसी मुसीबतों में ये हिन्दवाले पड़े हुए हैं।
कदम-कदम पर हमारी खातिर सितम के काँटे गड़े हुए हैं॥
हमारे मेहमाँ जो आये बन कर वो हुक्म करने लगे हमीं पर।
गजब है अपने मकाँ के मालिक मकाँ के बाहर पड़े हुए हैं॥
सरों पै आफत पड़ी हुई है गले में खंजर अड़े हुए हैं।
दिलों पै नश्तर चुभे हुए हैं जिगर में छाले पड़े हुए हैं॥
हवा जमाने की बिगड़ी अकबर गजब वो करने लगे सरासर।
सुनायें फरियाद किसको जाकर जबाँ पै ताले पड़े हुए हैं॥

[आदमियों की कतार साफ होती है। रंगमंच का प्रकाश नीला हो जाता है। पर्दा उठता है। काँग्रेस की वर्किंग कमिटी के लोग बैठे दिखलाई देते हैं। नेपथ्य से सीटी की आवाज। मिलिटरी का पहुँचना और संगीत तान देना। Light off—अन्धकार। धायँ-धायँ बन्दूकों का छूटना। बन्दूकों की आवाज क्रमशः कम होती-होती शान्त होती है। नेपथ्य में कोलाहल। आवाजें आ रही हैं।]

१—गान्धीजी गिरफ्तार हो गये !

२—गान्धीजी गिरफ्तार हो गये !

३—गान्धीजी गिरफ्तार हो गये !

सम्मिलित आवाज—गान्धी जी की जय !

१—अंगरेजो.....

सब—.....भारत छोड़ दो !

१—अंगरेजो.....

सब—.....भारत छोड़ दो !

[बन्दूकों की बौछार—धायँ-धायँ—सन्नाटा]

१ लड़का—अंगरेजो.....

कुछ लड़के—.....भारत छोड़ दो !

[गोली चलने की आवाज। पतली चीख। सन्नाटा। नीली रोशनी जलती है, रंगमंच प्रकाशित होता है। काँग्रेस वर्किंग कमिटी के नेतागण दिखलाई दे रहे हैं। मिलिटरी संगीन अड़ाये खड़ी है। नेपथ्य में गाना चल रहा है—]

खुदाया कैसी मुसीबतों में ये हिन्दवाले पड़े हुए हैं।
कदम-कदम पर हमारी खातिर सितम के काँटे गड़े हुए हैं॥

पर्दा

२

सड़क

[हाथ में रूसी झंडा लेकर कामरेड अनूप का आना और सड़क पर खड़े होकर कहना।]

(सवैया)

हीरा जवाहिर सोने की खानें सो दौलत के हैं अटूट भंडारे।
अन्न रूई घन धान्य प्रपूरन साधन एते हरैं जो न हारे॥
ऐसो हमारो है देश महान अहैं धनि धन्य सुजन्म हमारे।
सोई जपान उजारन चाहत सेना लिये खड़ो पूरब द्वारे॥

भाइयो, यह लड़ाई का जमाना है, ये युद्ध के दिन हैं। दुनिया के नक्शे बदल रहे हैं। बादशाहों के तख्त डोलने लगे हैं। गरीबों की बस्तियाँ उजड़ चली हैं। जमाने से आज अमन विदा हो चुका, यह खूँरेजी और खूँखारी का जमाना आया है। वक्त ने हमें पुकारा है कि हम सम्भल जायँ। हमें कमर कस कर तैयार होना है कि जापान इस देश में न घुस आवे। हमें कमर कस कर तैयार होना है कि जमनी रूस को न रौंद डाले। हम सबसे पहले जापानियों से मोर्चा लेंगे, सबसे पहले जापानियों से मोर्चा लेंगे, फिर उसके बाद अपनी नई दुनियाँ बसावेंगे।

[नगेन्द्र का प्रवेश]

नगेन्द्र—जनता का पता नहीं और नेताजी लेकचर दिये जा रहे हैं।.....कहो कामरेड, आजकल क्या शगल है ?

अनूप—शगल उनके लिये है जो राजनीति के काम को अपनी तरक्की का जरिया बनाते हैं। शगल वे करते हैं जो जनता को धोखा देकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। हमें शगल कहाँ ? आज हमें जनता को समझाना है कि यह लड़ाई इस देश की जनता का युद्ध है।

नगेन्द्र—भई, यह गुलाम देश है। हमारे देश में अगर कोई भी जनता का युद्ध होगा तो वह अपनी गुलामी की कड़ियों को तोड़ने के लिये होगा।

अनूप—मगर रूस को हमें सब से पहले देखना है। रूस दुनिया की गुलामी तोड़ने के लिये लड़ रहा है।

नगेन्द्र—मगर हमें तो यह भी मालूम नहीं कि रूस भारत के प्रति अपनी कौन-सी नीति रखता है। आज भी वह जापान की पीठ ठोक रहा है।

अनूप—मगर हम तुम्हारे उस कायर नेता सुभाष बोस की भाँति यह नहीं कहते कि जापान के सामने घुटने टेक दो। हम कहते हैं इन बेईमान फासिस्तों को मार गिराओ, इन्हें जहन्नुम में मिला दो। आज भारत के दरवाजे पर जापान खड़ा है और.....

[नेपथ्य से आवाज]

१—अंगरेज हमें पीस रहे हैं।

२—गान्धीजी गिरफ्तार हो गये।

३—राजेन्द्रबाबू गिरफ्तार हो गये।

४—मौलाना आजाद पकड़े गये।

१—अंगरेजो !.....

सब—.....भारत छोड़ दो !

१—अंगरेजो !.....

सब—.....भारत छोड़ दो।

१—सरकारी पुल.....

सब—.....तोड़ दो !

१—अंगरेजो !.....

सब—.....भारत छोड़ दो।

[बिगड़ी हुई एक भीड़ का नारा लगाते हुए प्रवेश]

एक—महात्मा गान्धी की....

सब—...जय !

अनूप—यह क्या है ?

नगेन्द्र—क्या बात है, भाइयो ?

१—गान्धीजी गिरफ्तार हो गये !

२—जवाहरलाल गिरफ्तार हो गये !

३—मौलाना आजाद आज सीखचों में बन्द हैं !

४—हम इसका बदला लेंगे !

५—हम अंगरेजों को मिट्टी में मिला देंगे !

६—हम भारत को आजाद करेंगे !

अनूप—साथियो, यह क्या करते हो ?

१—हम देश को आजाद करते हैं !

अनूप—झूठी बात है। तुम देश की छाती पर भाला मारते हो।

२—चुप रहो !

अनूप—नहीं-नहीं, मैं चुप नहीं रह सकता। यह नाजुक मौका है। होशियारी से काम लेना होगा। आज जापान तुम्हारे दरवाजे पर खड़ा है।

३—हम जापान से भी जूझ जायँगे।

नगेन्द्र—चलो भाइयो, हम आगे बढ़ें। आज हम आजाद हैं। बोलो—भारतमाता की.....

सब—.....जय !

[भीड़ को लेकर नगेन्द्र बढ़ जाता है। अनूप नगेन्द्र को रोकने का भाव लिये भीड़ के साथ जाता है।.....अब केवल अजपाल ही स्टेज पर बच गया है।]

अजपाल—बिलकुल पक्की बात है। हम दुश्मनों को चूर करेंगे, दुश्मनों को मार-मार कर पिलपिला, गुलगुला, लिबलिबा बना देंगे। हम अपने दुश्मनों को पीस डालेंगे। उसका आटा बनावेंगे, मैदा बना देंगे, उसका कचूमर निकाल डालेंगे और उसका चोकर झाड़ देंगे। मगर अब एक सवाल है। दुश्मन

मजबूत है, हम कमजोर हैं। दुश्मन के पास सब कुछ है, हमारे पास कुछ भी नहीं है। तब प्रश्न पैदा होता है कि हम दुश्मन को कैसे पस्त करें? इस तरह तो हमारा दुश्मन हमें शिकस्त दे देगा और हम लस्त हो जायँगे। इसलिये अब अलमस्त की तरह भीड़ में पेवस्त होने के बदले हमें दूसरा बन्दोबस्त करना चाहिये।.....

[जयराम का आना और भुजाली लेकर अजपाल के पीछे खड़े हो जाना]

.....सामने मौत है, पीछे जीवन है। अब मैं अपने आप से पूछता हूँ—क्यों यार अजपाल मजे में तो हो न? बाल-बच्चे अच्छे हैं न?...बाल-बच्चे तो मजे में हैं; लेकिन मेरी ही हालत खराब है।...अच्छा तो क्या कहते हो, आगे जाओगे या पीछे लौटोगे?...क्या कहते हो? पीछे लौटोगे?... अच्छी बात है भई, जब तुम यही कहते हो तो खैर, तुम्हारी ही बात सही।

[अजपाल पीछे लौटता है और जयराम उसपर भुजाली अड़ा देता है]

जयराम—क्यों क्या बात है?

अजपाल—कोई बात नहीं। यहाँ मर्दों की बात है।...मेरी ओर क्या देखते हो? चलो, आगे बढ़ो और दुश्मनों पर चढ़ाई कर दो, हमला बोल दो। बस, वीर की तरह एकदम आगे बढ़ जाओ।

जयराम—एकदम आगे बढ़ जाऊँ?

अजपाल—हाँ, एकदम आगे बढ़ जाओ।

जयराम—तो भई, जरा तुम्हीं आगे बढ़ कर बता दो कि कैसे आगे बढ़ा जाता है ?

अजपाल—मेरे बढ़ने की जरूरत नहीं। बहुत से लोग आगे बढ़ चुके हैं। तुम भी उसी तरह आगे बढ़ जाओ—एकदम नाक की सीध में आगे बढ़ो और सबसे आगे निकल जाओ।

जयराम—और तुम ?

अजपाल—मैं ? मेरी बात छोड़ दो। मैं तुम सभी लोगों को आगे बढ़ाऊँगा। जब तुम सभी लोग आगे बढ़ जाओगे तो मैं फिर ऐसा चलूँगा कि तुम सभी लोगों से बहुत आगे निकल जाऊँगा। इतना अधिक आगे निकलूँगा कि तुम मुझे खोज कर भी नहीं पा सकते।

जयराम—अब मैं कहता हूँ, तुम्हें आगे बढ़ना पड़ेगा।

[कटार अड़ाना]

अजपाल—यह खामख्वा भुजाली क्यों अड़ाते हो ? अगर कहीं पेट में घुस गया तो कितना दर्द होगा ? समझते हो, बहुत खून निकल जायगा।···हाँ, तो मैं कहता हूँ, मेरी बात मानो. तुम एकदम आगे बढ़ जाओ और शत्रुओं का सत्यानाश कर दो।

जयराम—कायर, तुम्हें भी आगे बढ़ना पड़ेगा।

अजपाल—मैं तो बढ़ता ही हूँ। चलो।...एकदम शत्रुओं पर हमला कर दो।...चलो, आगे निकलो।...

जयराम—आगे तुम चलो। तुम्हारे समान नेता ही आगे चलते हैं।

अजपाल—चलो!.....अरे, वह देखो। आओ, छिप जायँ।

[दोनों छिप जाते हैं। पुलिस का एक आदमी नगेन्द्र को पकड़ कर लाता है।]

नगेन्द्र—मेरा कसूर ?

सिपाही—जनता को भड़काना।

नगेन्द्र—इसका सबूत ?

सिपाही—कानून इसका सबूत देगा।

[अजपाल और जयराम का प्रकट होना]

जयराम—जनता का क्रोध ही जुल्मों का सबूत है। छोड़ दो इन्हें।

अजपाल—छोड़ दो इन्हें। छोड़ते हो या.....अरे यार, सब कोई कहते हैं तो इन्हें छोड़ दो। तुम इन्हें छोड़ दोगे तो हम तुम्हें एक बात बतलावेंगे। इन्हें तुम जानते हो ? इन्होंने क्या किया है ?

सिपाही—इन्होंने कहा है ब्रिटिश सल्तनत बेईमानों की, खुदगर्जों की, स्वार्थियों की और जुल्मियों की है।

अजपाल—अरे यार, तुम भी इनकी बात लिये फिरते हो। इनका दिमाग खफ्त है।

सिपाही—चलो-चलो, इनका दिमाग ठीक है। अगर इनका दिमाग दुरुस्त नहीं होता तो अभी ऐसी सही बात नहीं कहते।

जयराम—यदि तुम सीधी तरह नहीं मानते तो.....

(भुजाली दिखाना)

अजपाल—अरे भाई, इनका गुस्सा बड़ा खराब होता है। चलो, हटाओ, छोड़ दो इन्हें। तुम्हारा क्या बिगड़ता है ?

सिपाही—अगर हमारे पास भी हथियार होता तो हम भी दिखला देते।

अजपाल—इसीलिए तो कहता हूँ इन्हें छोड़ दो।

सिपाही—इन्सपेक्टर साहब पूछेंगे।

अजपाल—कह देना कि जनता उन्हें लूट कर ले गई। जनता का नाम लेना। मेरा नाम मत बताना—समझ गये ?

सिपाही—यदि मैं इन्हें न छोड़ूँ तो तुम भी मुझपर भुजाली से हमला करोगे ?

अजपाल—अजी नहीं, भुजाली नहीं; मेरे पास तो पिस्तौल है—एकदम बम्बास्टक पिस्तौल। अँगरेजी में उसे रिवाल्वर कहते हैं। देखोगे ? अच्छा, अब हम भी दिखलाते हैं। लो, देखो।...(कुर्ते के भीतर से ऊँगली निकालता है। सिपाही भय से अपना हाथ ऊँचा कर लेता है) अब मैं जैसा कहूँ वैसा करो। मैं कहता हूँ—एबाउटर्न ! (सिपाही हाथ उठाये

घूम जाता है ;...क्विक मार्च !...(सिपाही चला जाता है)

नगेन्द्र—धन्यवाद !

जयराम—अभी इसका समय नहीं। भारतमाता ने आपको पुकारा है। चलिये, चलें।

नगेन्द्र—चलो।

अजपाल - हाँ साहब, हम भी समझते हैं कि अभी धन्यवाद का समय नहीं। मगर अगर कोई हमें धन्यवाद दे ? खैर, चलिए, हम भी साथ चलते हैं।

[सबका जाना]

३

[सजा हुआ कमरा। सजावट में सादगी-स्वच्छता और अमीरी है। टेबिल, कुर्सियाँ, आलमारी, रेडियो, गुलदस्ते। एक कुर्सी पर कामरेड अनूप बैठा हुआ अखबार पढ़ रहा है। दूसरी कुर्सी पर बैठी हुई आभा गुलबन्द बुन रही है। पर्दा खुलता है। आभा एक अंगड़ाई लेकर उठती है, घड़ी देखती है और चल कर रेडियो की चाभी घुमा देती है। वह फिर आकर गुलबन्द बुनने लगती है। रेडियो से आवाज आ रही है :—]

"आदाब अर्ज। यह दिल्ली है। मैं ४.३५ मीटर से बोल रहा हूँ। अब आज की ताज़ी खबरें आपको बतलाई जा रही हैं। इन खबरों पर एसोशियेटेड प्रेस और युनाइटेड प्रेस का हक है।'

"हुजूर वायसराय ने काँग्रेस के रेजोल्यूशन पर तजवीज की और यही फैसला किया कि वे काँग्रेस के किसी भी नुमाइन्दे से इसलाह करने को राजी नहीं हैं।"

"मिस्टर जिन्ना ने आज एक अखबारी नामानिगार से बातचीत में फर्माया है कि काँग्रेस का Quit India प्रस्ताव मुसलमानों के अमन-चैन के लिये नुकसानदेह साबित होगा। शहर और गाँवों में हिन्दू-मुस्लिम दंगे होंगे और काँग्रेस इसकी जिम्मेवार होगी।"

"एसोशियेटेड प्रेस ऑफ इन्डिया को मालूम हुआ है कि मिस्टर गान्धी के प्राइवेट सेक्रेटरी जनाब महादेव हरिभाई देसाई पूना के आगा खाँ पैलेस में कैदी की हालत में बफात पा गये। कहते हैं कि उनकी मौत दिल की धड़कन रुक जाने के सबब से हुई है।"

"बम्बई में आज सात जगह जलूस निकले और सातों जगह मजबूर होकर पुलीस को गोलियाँ चलानी पड़ीं। कहते हैं कि सातों जगह कई राउन्ड फायर हुए। इससे एक भी आदमी नहीं मरा। हाँ, ईंट और पत्थरों की चोट से कुछ सिपाही घायल हो गये हैं। अस्पताल में जो घायल पड़े हुए हैं उनमें एक की हालत नाजुक बतलाई जाती है।"

"डा० राजेन्द्र प्रसाद और श्रीकृष्ण सिंह की गिरफ्तारी से सूबे बिहार में बड़ी हलचल है। जगलाल चौधरी ने, जो किसी वक्त उस सूबे में आबकारी महकमे के वजीर रह चुके

हैं, अब गिरोह बाँध कर डकैती शुरू कर दी है। आचार्य बदरीनाथ वर्मा को बड़ी बहादुरी के साथ पुलीस ने गिरफ्तार कर लिया। अब वे हिरासत में हैं। आज की ताजा खबरों से मालूम हुआ कि आज सूबे बिहार में दो थाने.....।

[अनूप उठकर रेडियो बन्द कर देता है]

अनूप—जनता पर जनून सवार है। जनता आज पागल है।

आभा—मगर इस पागलपन के सिवा जनता के पास कोई रास्ता नहीं है।

अनूप—जगलाल चौधरी जैसा आदमी आज डकैती पर आमादा हो गया है।

आभा—जगलाल चौधरी बिहार का रत्न है। वह ऐसा काम नहीं करता।

अनूप—और बदरीनाथ वर्मा ?

आभा—बदरीनाथ वर्मा से आज बिहार का नाम रौशन है।

अनूप—यानी ?

आभा—यानी तुम जो सुन रहे हो, बिल्कुल झूठ सुन रहे हो।

अनूप—यह एसोशियेटेड प्रेस की खबर है।

आभा—आज हिन्दुस्तान के पास कोई प्रेस नहीं और आज हिन्दुस्तान की कोई खबर भी नहीं।

अनूप—मतलब ?

आभा—मतलब यही है कि हिन्दुस्तान के वायसराय को आज इतना पावर है जितना जर्मनी में हिटलर को भी नहीं है

अनूप—मगर रेल के रास्तों को उखाड़ना अक्लमंदी नहीं।

आभा—रेल के रास्तों को उखाड़ कर जनता बतला रही है कि जिस रास्ते से होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद दानव की तरह चिंघारता-पुकारता चल रहा है—वह रास्ता हम नहीं मानते।

अनूप—और ये टेलीग्राफ और टेलीफोन के तार ?

आभा—इन तारों के मकड़ी के जाले में जनता की चेतना को उलझा कर रखा गया था। जनता उसे बरदाश्त नहीं कर सकती।

अनूप—और उधर से बढ़ता-चढ़ता जापान चला आ रहा है। एक ही झपट्टे में उसने सिंगापुर को दबोच लिया। अनाम-श्याम फिलिपाइन सब कुछ उसके चरणों के नीचे है। बर्मा में ब्रिटिश सल्तनत का खात्मा हो चुका।

आभा—तो इस भागती हुई सरकार से हम क्या उम्मीद रखें ?

अनूप—यहाँ की सरकार हिन्दुस्तान छोड़कर भाग सकती है; लेकिन हमें तो हिन्दुतान छोड़कर कहीं जाना नहीं है।

आभा—हाँ, हमें हिन्दुस्तान के सभी शत्रुओं से लड़ना है।

अनूप—लड़ना है—किस तरह ?

आभा—उसी तरह, जिस तरह आज हम अँगरेजों से लड़ रहे हैं।

अनूप—तुम्हारे पास कोई ताकत नहीं।

आभा—जनता के जनून में इतनी ताकत है कि ब्रिटिश हुकूमत

तो क्या, संसार की सारी हुकूमतें खाक में मिल सकती हैं।

अनूप—[गुस्से से]—आभा !

[आभा कोई जवाब नहीं देती]

अनूप—नगेन्द्र ने तुम्हारे दिमाग में जहर बो दिया है।

आभा—आप किसी के प्रति अनुचित बात नहीं कह सकते।

अनूप—(क्रोध से) आभा !.....नगेन्द्र अब गारत हो गया। उसके ऊपर बगावत का मुकदमा है। वह मुँह छिपाये भागा फिर रहा है। उसकी हस्ती मिट गई। नगेन्द्र ने तुम्हारे दिमाग में जो जहर बोया है उसे निकाल दो। दुनिया को देखो। दुनिया में नगेन्द्र के लिये कोई जगह नहीं। उसका अस्तित्व खतरे में है। मैं जा रहा हूँ; तुम याद कर लो, तुम्हें दुनिया में रहना है और दुनियावालों के साथ रहना है।

[जाने लगता है]

आभा—अनूप बाबू !

अनूप—(रुक कर)—कहो।

आभा—आप अपने मन में एक बात का कभी खयाल न करेंगे।

अनूप—किस बात का ?

आभा—कि मैं आपसे मुहब्बत करती हूँ।

अनूप—अच्छी बात है ! (प्रस्थान)

[नगेन्द्र का नौकर के वेश में आना]

नगेन्द्र—अरी वाह आभा, तुमने तो हमारे कामरेड को सीधा रास्ता बतला दिया।

आभा—वे ऐसी ही उलजलूल बातें कह रहे थे।

नगेन्द्र—अरे वाह री मेरी नटखट !.....

[दोनों का गाना]

आभा—तुम हो मेरे साजनवाँ.....

नगेन्द्र—तुम हो मेरी साजनियाँ.....

आभा—तुमको अपने मन में बिठा के
सुरभित करूँ मैं दिन-रतियाँ

नगेन्द्र—तुम हो मेरी साजनियाँ.....

आभा—तुम हो मेरे साजनवाँ.....

नगेन्द्र—अँखियन में तुम्हें छिपा के
तुमको प्राणों में रमा के
मुकलित करूँ मधुमय कलियाँ

आभा—सुरभित करूँ मैं दिन-रतियाँ

दोनों—मिल के अपना देश जगायें, अमृतमय आजाद बनायें
स्वर्गमयी हो ये गलियाँ
चालीस कोटि जनता जागे, माता के सपूत कहायें
आवे पुरातन रँगरलियाँ

नगेन्द्र—आओ मेरी साजनियाँ

आभा—आओ मेरे साजनवाँ

आभा—बड़े ढीठ हो जी तुम !

नगेन्द्र—सो कैसे ?

आभा—तुम हमारे घर में घुस कर हमसे मुहब्बत की बातें करते हो।

नगेन्द्र—मैं तो तुम्हारा नौकर बनकर तुमसे मुहब्बत करता हूँ। मगर मुहब्बत की बातें तुम्हें अच्छी नहीं लगती ?

आभा—तुम्हारे मुँह से तो अच्छी लगती है।

नगेन्द्र—और कामरेड के मुँह से ?

आभा—छी !

नगेन्द्र—अगर तुम्हारे पिताजी को मालूम हो जाय ?

आभा—अभी उनके आने का वक्त नहीं है।

नगेन्द्र—कब तक आवेंगे ?

आभा—वे जब भी आवें; लेकिन यह वक्त तो हमलोगों का अपना वक्त है।

[आभा के पिता रामवृक्ष सिंह पुलिस अफसर का प्रवेश। नगेन्द्र उन्हें देखकर जल्दी में फरनीचर को गमछा से साफ करना शुरू कर देता है। आभा अकचका जाती है]

आभा—पिताजी, आप ?

रामवृक्ष—हाँ !

आभा—इस वक्त ?

रामवृक्ष—जरूरत थी।

आभा—क्या बात है ?

रामवृक्ष—अभी मालूम हो जाता है।

आभा—क्या बात है, पिताजी ?

रामवृक्ष—मुझे मालूम हुआ है कि एक जहरीला साँप छिपकिली बन कर हमारे घर में घुसा हुआ है।

आभा—कहाँ ?

रामवृक्ष—इसी जगह। (नगेन्द्र को बतलाता है) वहाँ।

[नगेन्द्र घबरा कर अपना काम छोड़ देता है। रामवृक्ष सिंह उसकी छोटी-सी दाढ़ी उखाड़ कर उसपर पिस्तौल तान देता है।]

रामवृक्ष—अब बतलाओ; तुम कबतक बगावत का झंडा उड़ाते फिरोगे ?

नगेन्द्र—हमारा झंडा प्रेम का झंडा है।

रामवृक्ष—बागी !...बदमाश !

नगेन्द्र—मैं बागी नहीं।

रामवृक्ष—तुम बगावत का प्रचार करते हो।

नगेन्द्र—मैं अँगरेजों से कहता हूँ, तुम भारत छोड़ दो।

रामवृक्ष—तुम खून-खराबियों के जिम्मेवार हो।

नगेन्द्र—जो जनता पर जुल्म करते हैं वे इसके जिम्मेवार हैं।

रामवृक्ष—सावधान। तुम गिरफ्तार हो।

[आभा नगेन्द्र के सामने खड़ी होती है]

आभा—पिताजी !

रामवृक्ष—बस, अलग हो जाओ।

आभा—पिताजी !

रामवृक्ष—आभा, अलग हट जा। नगेन्द्र कानून का शिकार है

आभा—जुल्म का नाम कानून नहीं है।

रामवृक्ष—बगावत जुर्म है। तुम बागी का साथ दे रही हो।

आभा—नगेन्द्र बागी नहीं है।

रामवृक्ष—नगेन्द्र बागी है। नगेन्द्र !...

नगेन्द्र—मैं आत्म समर्पण करता हूँ।

रामवृक्ष—इधर आओ।

[नगेन्द्र अफसर के पास जाता है। अफसर उसके कन्धे पर हाथ रखता है]

रामवृक्ष—कहो, अब हेकड़ी खत्म हो गई ?...अब बतलाओ, तुम्हारे साथ कौन-कौन हैं ?...

नगेन्द्र—सबसे बड़ा बागी तो वह है ! [अफसर के पीछे की ओर बतलाना]

रामवृक्ष—कौन ? [पिस्तौल ताने हुए एकदम घूम जाता है। नगेन्द्र भाग जाता है] कोई तो नहीं ! [नगेन्द्र की ओर घूमता है और नगेन्द्र भागा हुआ है] नगेन्द्र ! नगेन्द्र ! [फायर] ठहर जाओ ! [पीछे से दौड़ता हुआ जाता है]

पर्दा

४

[सड़क। अजपाल का आना।]

अजपाल—अँगरेजो, भारत छोड़ दो। सरकारी पुल तोड़ दो। सरकारी सड़क कोड़ दो। जंजीरों को तोड़ दो। कायरता को छोड़ दो।....अरे बाबा, दम निकल गया। इधर निकलो, उधर भागो, इधर दौड़ लगाओ। या भगवान, कचूमर निकल गया।···हे भगवान, दयानिधान, दीन प्रतिपालक, दुश्मन-विदारक, तुम्हारी महिमा अपरम्पार है। हे भगवान, अबकी अगर मुझे जन्म देना तो इस भारतवर्ष में कदापि जन्म न देना। भारतवर्ष में जन्म लेने से पुलीस और मिलिटरीवाले बड़े जोरों से रगेदते हैं। अगर तेजी से नहीं भागो तो पकड़े जाओ। और पकड़े जाओ सो···ठायं !···फिर राम नाम सत्य है।···अब यह कौन आ रहा है ?···ओ, ये तो कामरेड बाबू हैं! इनसे मुठभेड़ होने की आशंका नहीं। [जरा किनारे जाकर कामरेड अनूप को सुनाता है। अनूप आकर चुपचाप सुनता है।] लड़ो तो बस रूस की तरह लड़ो। फासिस्टों का

फस्त खोल दो। जर्मनों को जकड़ दो, जापान को पकड़ लो। रूस की जय बोल दो।.....

अनूप—वाह भाई अजपाल, देखता हूँ तुम बड़े बुद्धिमान हो। तुम्हें इतनी अक्ल कहाँ से आई ?

अजपाल—पुलीसवालों ने मुझे बड़े जोरों से रगेद कर दौड़ाया। दौड़ते-दौड़ते मुझमें कब जो अक्ल आई यह मैं नहीं कह सकता। मगर अक्ल तो काफी आ गई है—क्यों ?

अनूप—रूस के बारे में आपका क्या खयाल है ?

अजपाल—बड़ा अच्छा खयाल है। रूस में मार्शल स्तालिन, कनल बुखारिन और मोशियो अजरबेजान बस दिलोजान से लड़े जा रहे हैं। आग लगाने में, पुल तोड़ने में, रेल और तार काटने में वे हिंदुस्तानियों से भी बड़े बहादुर हैं।

अनूप—बड़े बहादुर हैं। आपका क्या खयाल है ?

अजपाल—बड़ा अच्छा खयाल है। मगर आपका क्या खयाल है ? पुलीस इधर आ रही है या नहीं ?

अनूप—पुलीस तो इधर नहीं थी। शायद आ भी जाय। हाँ, तो रूस बड़ा वीर देश है न ?

अजपाल—जी हाँ, रूस तो वीर है सो है ही; हमारे यहाँ की पुलीस भी बड़ी वीर है। मैं चलता हूँ। नमस्ते।

अनूप—चलते हैं—क्यों ?

अजपाल—आपने ही कहा कि पुलीस इधर आ रही है। कहीं मैं गिरफ्तार हो जाऊँ तब ?

अनूप—आप क्यों गिरफ्तार होने लगे ? आप तो तोड़-फोड़ में शरीक नहीं हैं न ?

अजपाल—अजी साहब, तोड़-फोड़ में रहनेवाले तो गिरफ्तार होते ही नहीं। गिरफ्तार तो हमारे ही जैसे भले लोग हो जाते हैं।

अनूप—घबराओ मत, कामरेड ! तुम कम्यूनिस्ट पार्टी के मेम्बर हो जाओ।

अजपाल—कम्यूनिस्ट पार्टी का मेम्बर !

अनूप—हाँ, पहले तुम मेम्बर तो हो जाओ, उसके बाद मैं तुम्हें ऐसा साहित्य पढ़ाऊँगा कि तुम्हारे मिजाज ठँढे हो जायँगे।

अजपाल—देखिये, कहीं आपका साहित्य पढ़ कर मैं भी ठंढा न हो जाऊँ।

अनूप—घबराओ नहीं। पहले तुम मेरे साथ चलो तो।

अजपाल—चलो।

[दोनों का जाना]

[नगेन्द्र ढिंढोरा पीटनेवाले की वेष में आता है]

नगेन्द्र—हर खास व आम को आगाह किया जाता है कि नगेन्द्र नाम का काँग्रेसी गुंडा पुलीस के कब्जे से निकल कर भाग गया है। जो शख्स उसे पकड़ कर सरकार के

हवाले करेगा उसको एक हजार रुपया ईनाम दिया जायगा। ताकीद जानो।

[ढिंढोरा]

[अजपाल आकर चुपचाप सुन रहा है]

अजपाल—हाँ भई, क्या कहा ? नगेन्द्र भाग गया ?

नगेन्द्र—हाँ, भाग गया।

अजपाल—अच्छा, तो यह समझो कि मैं उसे पकड़ना चाहता हूँ। यानी तुम यही खयाल करो कि मुझे एक हजार रुपयों की सख्त जरूरत है। तो अब तुम यह बतलाओ कि अगर मैं नगेन्द्र को पकड़ लूँ, तो मुझे ये रुपये मिल जायँगे न ?

नगेन्द्र—जरूर मिलेंगे।

अजपाल—जरूर मिलेंगे न ?

नगेन्द्र—हाँ।

अजपाल—अच्छा भई, तो मैंने भी नगेन्द्र को पकड़ लिया !

नगेन्द्र—(मुँह पर ऊँगली रख कर) चुप ! [प्रस्थान]

अजपाल—लो, पास में आया हुआ एक हजार का चेक भी चला गया। खैर,.....अरे बापरे !

[कामरेड अनूप आकर उसे पीछे से पकड़ता है]

अनूप—लो, तुम इधर भाग आये !

अजपाल—अजी वाह जनाब, भागूँ क्यों नहीं ? उधर पुलीस जो खड़ी थी। आजकल पुलीस तो पागल हो गई

है। जिसको चाहती है उसीको पकड़ लेती है।

अनूप—चलो, मैं तुम्हें प्रगतिशील साहित्य पढ़ाता हूँ।

अजपाल—माफ करो भई अपना साहित्य। यहाँ पुलीस के डर से प्राण संकट में है उधर तुम्हें साहित्य की पड़ी है।

अनूप—तुम्हें पुलीस से क्या डर ?

अजपाल—भाई, मैं नगेन्द्र बाबू को पहचानता हूँ। इसीसे बड़ा डर लगता है।

अनूप—तुम क्यों डरते हो ?

अजपाल—अजी वाह साहब, मुझे डर लगता ही है तो आप डरने से भी मना करेंगे ?

अनूप—तुम्हें बिल्कुल डरना नहीं चाहिये।

अजपाल—अच्छा, लीजिये; अब मैं नहीं डरता। [अकड़ कर खड़ा होता है], मेरे समान बहादुर अब कोई नहीं। अंगरेजो, भारत छोड़ दो। सरकारी पुल, तोड़ दो, सरकारी सड़क, कोड़ दो। जंजीरों को, तोड़ दो।...

अनूप—चुप रहो, यह क्या बकते हो ?

अजपाल—हिम्मत पैदा कर रहा हूँ, जनाब। बोलो, भारत माता की जय !

अनूप—खबरदार, बोलो लाल झंडे की जय !

अजपाल—आपके लाल झंडे की जय बोलने से मुझे जरा भी जोश नहीं आता। खैर, जब आप कहते हैं तो मैं बोलता हूँ। हँसिया-हथौड़ावाले लाल झंडे की जय। देखिये, कहाँ जोश आता है ?

अनूप—अजीब हाल है, रूस में इसी झंडे से बहुत जोश चला आता है; यहाँ क्यों नहीं आता ?

अजपाल—रूस बड़ी ठंढी जगह है, जनाब। वहाँ का जोश दूसरे किस्म का होगा।

अनूप—अच्छा, तो मैं चला।

अजपाल—अच्छा जाइये, मैं आपसे एक बात कहना चाहता था;...लेकिन खैर, जाने दीजिये।...अब आप से नहीं कहूँगा।

अनूप—क्या बात है ?

अजपाल—अजी साहब, बड़ी गुप्त बात है।

अनूप—कौन-सी गुप्त बात ?

अजपाल—अजी जनाब, वह ऐसी गुप्त बात है जिसे मैं आपसे कहना चाहता था, मगर नहीं कहा। जिस बात को मैं कहना चाहता हूँ, मगर नहीं कहूँगा। उस बात को मैं नहीं कहना चाहता, क्योंकि मैं उस बात को कहना चाहता हूँ। समझ गये न ?

अनूप—खाक समझा। असल बात कहो तब तो पता लगे।

अजपाल—वाह, असल बात कैसे कहूँ ? असल बात तो बहुत गुप्त है।

अनूप—जहन्नम में जाओ, मत कहो। मैं चला।

अजपाल—अजी जनाब; सुने जाइये। मगर देखिये, किसी से कहियेगा नहीं। सुनिये.....

[कान में कुछ कहता है। सुनने के बाद अनूप चौंकता है]

अनूप—नगेन्द्र ! नगेन्द्र !···

अजपाल—चुप, चुप। बड़ी गुप्त बात है।

अनूप—बस, चुप रहो। मेरा खून खौल उठा है। तुम यहीं ठहरो। मैं पुलीस को साथ लेकर आता हूँ।

अजपाल—पुलीस ?

अनूप—चुप ! (जाना)

अजपाल—हे भगवान्, हे पाक गौड, हे ईश मसीहा, तू मुझे अपने दामन में छिपा। हे सभी देवता, और सभी देवताओं के देवता और उनके भी देवता, मेरी रक्षा करो

[नगेन्द्र का ढिंढोरा पीटता हुआ आना]

नगेन्द्र—हर खास व आम को आगाह किया जाता है कि नगेन्द्र नाम का कांग्रेसी गुंडा पुलीस के कब्जे से निकल कर भाग गया है। जो शख्स उसे पकड़ कर सरकार के हवाले करेगा उसे एक हजार रुपया ईनाम दिया जायगा। ताकीद ज नो। [ढिंढोरा देना]

[सिपाही को साथ लेकर अनूप का आना]

अनूप—पकड़ लो; यही नगेन्द्र है।

[आगे बढ़ कर उसकी मूँछें निकाल देता है। सिपाही नगेन्द्र को पकड़ लेता है। अजपाल घबरा जाता है। फिर हिम्मत करके आगे बढ़ता हुआ सिपाही से कहता है :]

अजपाल—अरे यार, मैं उसी दिन से तुम्हें कह रहा हूँ कि यह अच्छा आदमी है। इसको मत पकड़ा करो। मगर तुम हो कि मानते ही नहीं। छोड़ो इसे—छोड़ दो। छोड़ते हो या·····

सिपाही—लो! [छोड़ देता है]

अनूप—मैं कहता हूँ, इसे पकड़ो।

अजपाल—खबरदार! मैं अपना बम्बास्टक पिस्तौल निकालता हूं। कुर्ते के भीतर से ऊँगली दिखलाता है। सिपाही अपना हाथ ऊँचा कर लेता है। अजपाल सिपाही को डाँट कर कहता है] एबाउटर्न! [सिपाही घूम जाता है] किक मार्च! [सिपाही चला जाता है]

अनूप—अजपाल, तुमने यह बुरा किया। नगेन्द्र, मर्द हो तो तुम वहीं खड़े रहो।

[अनूप उसे पकड़ने के लिये आगे बढ़ता है कि अजपाल अपने कुर्ते के भीतर की ऊँगली को पिस्तौल की भाँति तान देता है। अनूप अपना हाथ उठा लेता है।]

अजपाल—बस खबरदार!·····आगे बढ़े तो फर्शेखाम कर दूँगा, अभी तुरत तेरा काम तमाम कर दूँगा।

लगी चोट गोली की जिसके दिल पर
वही दर्दे दिल का मजा जानता है।
मुझे तुझसे कहने की हाजत नहीं है
मेरी गोली का तू मुद्दआ जानता है।

मेरे रुतबे से वाकिफ़ खुदा है
कि खुदा को हबीबें खुदा जानता है।

नगेन्द्र—अरे भई, अपनी पिस्तौल हटा लो। बिचारे बहुत डर गये हैं।

अजपाल—[अनूप से] समझ लो; आज इसी पिस्तौल से तुम्हारे छक्के छुड़ा दूँगा, तुम्हारी बोटियाँ उड़ा दूँगा। चलो, एबाउटर्न [अनूप घूम जाता है] क्विक मार्च! [अनूप चला जाता है]

नगेन्द्र—भई वाह, तुमने बड़े मौके पर काम दिया।

अजपाल—जी, मेरी बहादुरी तो वक्त पर ही काम देती है। मगर आप आजकल रहते कहाँ हैं?

नगेन्द्र—हरिजनों के मुहल्ले में रहता हूँ और उन्हीं की सेवा करता हूँ।

अजपाल—मगर आप जल्दी से जल्दी और उससे भी पहले देहातों में निकल जाइये। यहाँ पुलीस आपकी जान की गाहक हो गई है।

नगेन्द्र—और तुम?

अजपाल—मेरी छोड़िये। मेरा खुदा मालिक है।

नगेन्द्र—कामरेड अनूप तुम्हारा दुश्मन हो गया।

अजपाल—होने दीजिये।

नगेन्द्र—वह तुम्हें फँसावेगा।

अजपाल—देखा जायगा।

नगेन्द्र—मैं कहता हूँ, तुम भी मेरे साथ चलो।

अजपाल—जी जनाब, आपके साथ जाकर मैं देहातों में क्या झक मारुँगा। मेरे डेढ़ दर्जन कच्चे-बच्चे क्या करेंगे? आपको क्या, न जोरू न जांता, खुदा मियाँ से नाता। चाहे देहात में चले गये चाहे पहाड़ पर चढ़ गये। आपके लिये सब बराबर है। जाइये आप। नमस्ते।

नगेन्द्र—नमस्ते।

[दोनों का दो ओर चला जाना]

५

[देहात का दृश्य। चांदनी रात। सामने झोंपड़ियाँ खड़ी हैं! देहात के लोग बैठे हुए ढोलक मजीरा लिए भजन गा रहे हैं]

जोगिया से मेरा दिल लागा।
जबसे प्रीत लगी जोगिया से आठ पहर रहूँ जागा॥
जोगिया के कारण जोग कमाऊँ भयो हंस नहि कागा॥
जत-तब जोगिया मौज करत है पाय अमर पद धागा॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो जरा मरन भ्रम भागा॥

[देहातियों का भजन समाप्त होता है। उधर से योगी के वेश में नगेन्द्र का भजन गाते हुए आना]

रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा॥
संतो के जीवन ध्रुव तारे भक्तों के प्राणों से प्यारे।
विश्वम्भर सब जग रखवारे सब विधि पूरन कामा॥

[एकाएक म्युजिक बन्द होता है]

१—कहाँ से आये हो, बाबा?

नगेन्द्र—साधु हैं भई। भगवान के नाम का अलख जगाता हूँ। कहाँ से आता हूँ और कहाँ जाऊँगा यह तो मैं भी नहीं जानता।

१—बैठो, बाबा!

[नगेन्द्र बैठ कर भजन गाता है। देहाती लोग क्रमशः उसे कोरस बना लेते हैं और गाते हैं]

रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा ॥
अजामील दुख टारन हारे गज गनिका के तारन हारे ॥
द्रुपदसुता भय वारन हारे सुखमय मंगल धामा ॥
अनल अनिल रविशशि तारे मुझपर घन जन तन मन वारे ।
धन्य-धन्य वे जग उजियारे जिनके मुख यह नामा ॥
रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा ॥

[पुलीस अफसर रामवृक्ष सिंह के साथ आकर सिपाही सबको घेर लेते हैं]

१—यह क्या ?

२—भाई, हमने क्या किया ?

रामवृक्ष—तुमलोग बागी हो।

१—बागी !

२—बागी !

३—बागी !

रामवृक्ष—हाँ, बागी !

१—हमने क्या किया है ?

२—हमारा क्या कसूर है ?

रामवृक्ष—तुमने फरार को छिपाया है।

३—हम बेकसूर हैं।

१—हम किसी फरार को नहीं जानते।

२—हमपर जुल्म हो रहा है।

३—हमने किसी को नहीं छिपाया।

२—हमें कुछ मालूम नहीं।

रामवृक्ष—जब तुम्हारी झोपड़ियों में आग लगेगी, जब तुम्हारे बाल-बच्चे गोलियों से भून दिये जायँगे, तब तुम्हें सब कुछ मालूम हो जायगा।

१—यह जुल्म है।

रामवृक्ष—हाँ, जुल्म है; तो ?

१—जुल्म कर लो; भगवान सब कुछ देखता है।

रामवृक्ष—भगवान पीछे देखेगा। पहले हम तुमलोगों को देख लें।

सिपाही—हुजूर, इन लोगों से कुछ मालूम नहीं होगा। अब काम शुरू होना चाहिये।

रामवृक्ष—इन झोपड़ियों को सर्च करो। देखो कोई छिपा है या नहीं ?

[एक सिपाही झोपड़ी के अन्दर जाकर एक युवती को जबरदस्ती पकड़ लाता है। सहसा एक आदमी चिल्ला उठता है]

१—वह हमारी लड़की है। खबरदार, उसपर हाथ न लगाओ। अत्याचारी, इन्साफ और कानून के नाम पर इतना जुल्म न करो। मैं कहता हूँ उसपर ध्यान न लगाओ। वह हमारी लड़की है। हमारी लड़की पर हाथ न लगाओ।

१ सिपाही—खबरदार ! (फायर)

१— ···आ···ह !··· [गिर जाना]

२—नीच; हत्यारे ! तुम कानून का नाम लेते हो और हम पर जुल्म करते हो। भगवान तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। उस लड़की को छोड़ दो। छोड़ दो। नहीं छोड़ते ? तुम्हें छोड़ना होगा····· [आगे बढ़ता है]

सिपाही—चुप बदमाश ! [फायर]

[वह आदमी रास्ते में ही गिर जाता है]

२— ···आ·····ह !··· [गिर जाना]

रामवृक्ष—[देहातियों से] अब तुमलोग शान्त हो गये न ? देख लिया कि अँगरेजी सरकार के सामने सिर झुकाने से क्या होता है। अब तुम्हारे अन्दर जो सबसे बहादुर हो, मेरे सामने आवे। आगे बढ़ो, इधर आओ, देख लो हमारी सरकार के पास कितनी ताकत है·····बोलो कोई आता है ?

[सब चुप, शान्त, निस्तब्ध, आवाक्]

रामवृक्ष—तुमलोगों ने हमारी ताकत देख ली न ?····· [सिपाहियों से] अब उस लड़की को ले आओ··· इस गाँव में आग लगा दो—आग लगा दो, जला दो, खाक कर दो। इन झोपड़ियों को लूट लो। चलो, आगे बढ़ें। कोई सामने आवे तो उसे गोलियों से भून दो—भून दो—जला दो·····

[एक सिपाही इसी बीच मशाल जला लेता है और आगे बढ़ता है। सहसा नगेन्द्र दौड़ कर सबके सामने पहुँच जाता है और रामवृक्ष के कन्धे झकझोर देता है :]

नगेन्द्र—नहीं-नहीं नहीं, तुम इतना अत्याचार नहीं कर सकते। मैं इतना अत्याचार नहीं देख सकता। यह दुनिया क्या कहेगी ? वह आसमान क्या कहेगा ? स्वर्ग क्या पूछेगा ? नरक क्या जवाब देगा। ये बेकसूर लाशें जब आजाद हिन्दुस्तान में उठकर तुमसे जवाब तलब करेंगी, तब तुम क्या जवाब दोगे ? जब श्रीकृष्ण आकर तुम से इसका जवाब माँगेगा तब तुम उससे क्या कहोगे ? हिन्दुस्तान की तवारीख तुम्हें किन शब्दों में याद करेगी ? अभीतक मैं बागी नहीं था, मगर ये बेगुनाह इन्सान मर-मर कर हमें जिला रहे हैं। ये मुर्दे पुकार रहे हैं, ऐ हिन्दुस्तानवालो, जुल्मी हुकूमत के खिलाफ बगावत कर दो, हिन्दुस्तान से हैवानियत को उठा दो, पाप को कत्ल कर दो। मुझे पकड़ लो, मैं बागी हूँ। मुझे पकड़ लो, कि मुझसे ये अत्याचार नहीं देखे जाते, ये लाशें नहीं देखी जातीं ; बेटी-बहू की अस्मत का यह खून नहीं देखा जा सकता। मुझे पकड़ लो, मैं बागी हूँ। मुझे गोली मार दो, मैं बागी हूँ। मुझे जिन्दा जला दो, मैं बागी हूँ। बगावत मेरा पेशा है। जुल्मों के खिलाफ उठना मेरी हस्ती है। मुझे मार डालो, मुझे मसल डालो, मैं

बागी हूँ। यदि तुम मुझे नहीं मारोगे तो मैं तुम लोगों को मार डालूँगा। मुझे पकड़ लो, मैं ही नगेन्द्र हूँ। नगेन्द्र पुकार रहा है, मुझे पकड़ लो। मुझे पकड़ लो, मुझ से ये लाशें नहीं देखी जातीं, मुझ से तुम्हारा यह इन्साफ नहीं देखा जाता, मुझसे तुम्हारे ये कानून नहीं देखे जाते। मुझे पकड़ लो, मैं नगेन्द्र हूँ—मैं ही नगेन्द्र हूँ.....मुझे पकड़ लो.....मुझे पकड़ लो...मुझे ...

[बेहोशी। नगेन्द्र चक्कर खाकर गिर पड़ता है]

पर्दा

६

[गाँव का दृश्य। देहाती लोग बैठे हैं और उदास मन से भजन गा रहे हैं]

तन घर सुखिया कोई न देखा जो देखा सो दुखिया
घाटे-बाटे सब कोई दुखिया क्या गिरही वैरागी
शुक आचारज दुखके कारन गर्भ से माया त्यागी
जोगी दुखया जंगम दुखिया तापस को दुख दूना
आसा तृष्णा सब घट व्यापै कोई महल नहि सूना
अवधू दुखिया भूपत दुखिया दुखी रंक विपरीती
कहैं कबीर सकल जग दुखिया संत सुखी मन जीती

[गाना खत्म होता है। पिरथीचंद का उदास प्रवेश]

पिरथी—बिचारी लड़की अस्पताल में मर गई !

नागो—मर गई !

गंगा—मर गई !

मनी—सब समाप्त हो गया।

नागो—बाप मारा गया, चाचा मारा गया, घर जल गया और वह आप भी खत्म हो गई।

गंगा—चलो, अच्छा हुआ। दुख नहीं भोग सकी।

पिरथी—जो कुछ घर में था वह भी तो लूट लिया गया था।

गंगा—और घर में आग भी लगा दी गई थी।

नागो—आज गाँव में कोई भी सुखी नहीं।

मनी—हम रोते हैं और हमारे जानवर उपवासे फिर रहे हैं।

गंगा—ओह एक ही घड़ी में क्या से क्या हो गया। वे अन्धड़ की तरह बढ़ आये, आफत की तरह घिर गये। वज्र की तरह बन्दूकें कड़क उठीं। गाँव जल गया और हम तबाह हो गये।

नागो—मालूम होता है जैसे धरती में इन्साफ नहीं, आसमान में भगवान नहीं। लगता है जैसे पाप का सूरज चमकता है, जैसे अत्याचार की चाँदनी चमकती है। जगत में सर्वत्र अन्याय व्याप्त हो गया है।

गंगा—हमारे गाँव को अनाज की तरह रौंद दिया गया, कूड़े की तरह जला दिया गया और हम कटे हुए खेत की तरह उजड़े पड़े हैं।

पिरथीचंद—आह, अगर कहीं परमात्मा होता।

नागो—तो सुख की दुनिया होती।

मनी—तब शान्ति का समाज होता।

पिरथी—और मनुष्यता का कानून होता।

गंगा—ऐसा न कहो, भाइयो। परमात्मा अभी भी जी रहा है। वह अभी भी सब कुछ देख रहा है, सब कुछ जान रहा है। भगवान के राज्य में देर है, मगर अन्धेर

कदापि नहीं है ; वह सब कुछ देख रहा है—सूरज और चाँद की आँखों से देख रहा है। पवन और प्रकाश से सब कुछ सुन रहा है। उस घट-घट व्यापी से कुछ भी अगोचर नहीं। एक दिन देख लेना, इस रात की काली में भी भोर की लाली खिलेगी। तब हम उसके अन्दर से परमात्मा का शान्तिमय स्वरूप देखेंगे। तब अमन और चैन की दुनिया बसेगी। तब.....

[पुलीस अफसर रामवृक्ष सिंह के साथ सिपाहियों का प्रवेश। सिपाही लोगों को घेर लेते हैं।]

रामवृक्ष—मुझे देख कर तुमलोग हैरत करते होगे—क्यों ?

पिरथी—हाँ श्रीमान्, हैरत होती है, क्योंकि अब हमारे पास कुछ बचा नहीं है।

नागो—हम उजड़े पड़े हैं। हमारे पास कुछ भी नहीं।

रामवृक्ष—मगर सरकार के प्रतिनिधि का स्वागत तो तुम्हें करना ही होगा।

रंगा—अब तो हमारे गाँव में कुछ है नहीं। आज गाँव के अन्दर एक भी फालतू जान नहीं जो आपके काम में आवे, आज गाँव में एक भी जवान लड़की नहीं जिसके द्वारा आप लोगोंका स्वागत किया जाय। आज हम लाचार हैं, आप के स्वागत के लायक नहीं हैं।

रामवृक्ष—ठीक है, मैं अपना स्वागत नहीं चाहता। आज मैं

तुम्हारे पास तुम से जुर्माना वसूल करने के लिये आया हूँ।

नागो—जुर्माना !

मनी—जुर्माना !

गंगा—हमने क्या किया है ?

पिरथी—हमारा कसूर क्या है ?

नागो—यह जुर्माना किस लिये ?

रामवृक्ष—जुर्माना इसलिये कि सरकार को तुम्हारी बगावत को दबाने में खर्च पड़ा है। हमारी गोलियों से तुम्हारी जो बगावत छेदी जा रही है उन कारतूस और गोलियों का खर्च कौन देगा ? हमारी सरकार जब तुम्हारे गाँवों को जलाती है तो उसमें भी खर्च पड़ता है। सरकार का वह खर्च कौन देगा ?

गंगा—हम सरकारी खर्चों के जिम्मेवार नहीं। हमसे पूछ कर सरकार ने हम पर गोलियाँ नहीं चलाई, हमारी मर्जी से हमारे गाँव में आग नहीं लगाई गई, हमारी इच्छा से हमको रौंदा नहीं गया। हम सरकारी खर्चों के जिम्मेवार नहीं।

रामवृक्ष—मगर इन्साफ का तकाजा है कि तुम उस खर्चे को चुका दो।

नागो—क्यों ?

रामवृक्ष—क्योंकि सरकार तुम से नाराज है। सरकार ने तुम्हारे गाँव पर तीन हजार रुपयों का जुर्माना किया है।

गंगा—तीन हजार !

पिरथी—तीन हजार !

मनी—तीन हजार !

नाग—तीन हजार हम कहाँ से देंगे ?

रामवृक्ष—चाहे जहाँ से हो। रुपये तो तुम्हें देने ही पड़ेंगे।

गंगा—हमें कौन देगा ?

रामवृक्ष—हम यहाँ तुम्हारी घर-गृहस्थी की तफशील सुनने नहीं आये हैं। हम रुपया वसूल करने आये हैं—हमें रुपया चाहिये।

गंगा—मगर यह भी तो मालूम हो कि गाँव के किस व्यक्ति पर कितना जुर्माना हुआ है।

रामवृक्ष—यह व्यक्तिगत जुर्माना नहीं, यह सामूहिक जुर्माना है। सारे गाँव पर जुर्माना हुआ है, सारे गाँव को देना पड़ेगा।

नागो—मगर यदि सारे गाँव को बेच देने से भी तीन हजार नहीं मिल सके, तब ?

रामवृक्ष—हम मगर और यदि नहीं सुनना चाहते। हम रुपया लेने आये हैं और रुपया लेकर जायंगे।

गंगा—[चल कर उसके पास पहुँच जाता है] रुपये हमारे पास नहीं हैं।

रामवृक्ष—रुपये हमारे पास नहीं हैं ! ! [चाँटा मारना] रुपया तुम्हारे पास होना पड़ेगा। रुपया लिये बगैर हम यहाँ से नहीं जायँगे—रुपया तुम्हें देना ही पड़ेगा।

[फिर गंगा की ओर बढ़ता है, कि नागो कह उठता है)

नागो—हम आपको रुपये देते हैं, हम आपको रुपये देंगे; लेकिन आप हमारे सामने हमारे भाई को बेइज्जत नहीं कर सकते। आप हमें लूट सकते हैं, हमें जला सकते हैं लेकिन हमारा अपमान नहीं कर सकते। हम आपको रुपये देंगे। हम अपनी उजड़ी हुई जमीनों को बेंच देंगे, हम अपने जले हुए बर्बाद घरों को बेंच देंगे, हम अपने जानवरों को बेचेंगे, अपने आपको बेचेंगे और आपको रुपये देंगे। लेकिन आप हमारे सामने हमारे इन भाइयों का अपमान नहीं कर सकते।

रामवृक्ष—इतने ताव में न आओ। जली हुई रस्सी हो, ज्यादा ऐंठ न दिखलाओ। तुम बदमाशों ने हरएक थाने को चौरी-चौरा बना दिया है।

नागो—और तुमने भी हरएक गाँव को जालियाँवाला बाग बना डाला है। जनरल डायर अंगरेज था, तुम हिन्दुस्तानी हो, मगर हिन्दुस्तान की जनता तुमसे इतनी घृणा करती है जितनी जनरल डायर से भी नहीं करती होगी।

रामवृक्ष—चुप शैतान।

[आगे बढ़ कर थप्पड़ मारता है। गाँववाले आगे बढ़ कर उसे बचाना चाहते हैं कि पुलीस के लोग किर्च सामने कर देते हैं।]

पर्दा

७

[सड़क। अजपाल का आना।]

अजपाल—कम्बख्त जीना भी आफत हो गया है। जिधर देखो उधर ही सर्च है, जिसको देखो वही जेल में चला जा रहा है। ऐसी हालत में सवाल होता है कि मैं क्या करूँ? मैंने अपने बारे में बहुत गौर किया, बहुत विचार किया और उसके बाद न्यूट्रल हो गया। मगर अब न्यूट्रल होने पर भी पनाह नहीं। पुलीस कहती है कि तुम जनता की तरफ हो। जब जनता की तरफ जाता हूँ तो जनता कहती है कि तुम सी० आई० डी० हो। न्यूट्रल बिचारे को हर जगह आफत। अब यही तय किया है कि एकदम कम्यूनिस्ट हो जाऊँ और सीधे पाकिस्तान का नारा लगाना शुरू कर दूँ।

[पुलीस का वही सिपाही आता है और उसे पकड़ लेता है]

सिपाही—कहो बच्चेराम, बहुत दिनों से भागते फिरते थे। अब कहाँ जाओगे? चलो, थाने पर चलो, दारोगाजी कई दिनों से तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।

अजपाल—ऐं, यह क्या बात ? तुम मुझे पहचानते हो या नहीं ?

सिपाही—पहचानता हूँ इसीलिये तो तुम्हें पकड़ा है।

अजपाल—तो मैं निकालूँ अपना बम्बास्टक पिस्तौल ? [कुर्ते के भीतर से ऊँगली निकाल कर] बस खबरदार ! आगे बढ़े तो फर्शेखाम कर दूंगा, इसी पिस्तौल से तेरा काम तमाम कर दूँगा।

लगी चोट गोली की जिसके दिल पर
वही दर्दे दिल का दवा जानता है।
मुझे तुझसे कहने की हाजत नहीं है
मेरी गोली का तू मुद्दआ जानता है।
मेरे रुतबे से वाकिफ खुदा जानता हैं
कि खुदा को हर्वाबे खुदा जानता है।

[सिपाही डरने का कोई भी लक्षण नहीं दिखलाता]

सिपाही—हाँ-हाँ, बहुत हुआ; अब चलो, जरा बड़े घर की हवा खा लो।

अजपाल—खबरदार। आगे मत बढ़ो। चलो, एबाउटर्न। एबाउटर्न...एबाउटर्न...

सिपाही—आज किसी दूसरे उल्लू को एबाउटर्न किया करना। यहाँ तुमसे डरनेवाले नहीं हैं।

अजपाल—क्यों यार, इतने दिनों से तो तुम बहुत डरते रहे। आज तुम्हें हो क्या गया है ?

सिपाही—ऐसी-ऐसी पिस्तौलें हमने बहुत देखी हैं।

अजपाल—बहुत नहीं, सिर्फ तीन बार ही तो तुम्हें मैंने यह पिस्तौल दिखलाई है। दो बार तो तुम डर गये, आज एकदम डरते ही नहीं।.....अच्छा, तो अब मुझे बतलाओ कि मैं क्या करूँ? इस पिस्तौल को छिपा लूँ?

सिपाही—छिपा लो या जहन्नम में जाओ। पहले थाने चलो।

अजपाल—यार, तुमने ठीक समझा है। मेरे पास इस्तौल-पिस्तौल कुछ भी नहीं। बस कुर्ते के भीतर ऊँगली डाली और पिस्तौल तैयार। अगर तुम्हें भी किसीको डराना हो तो ऐसा ही किया करना।

सिपाही—वह सब पीछे किया जायगा। अभी तुम सीधी तरह से थाने में चलते हो या लगाऊँ हाथ?

अजपाल—अरे यार, तो क्या सचमुच तुम मुझे थाने में ले जाओगे? मैंने तो समझा था कि तुम दिल्लगी कर रहे हो।

सिपाही—दिल्लगी-विल्लगी मैं नहीं जानता। तुम्हें थाने में चलना पड़ेगा।

अजपाल—अजी भाईजी, जरा खयाल तो करो, हमारे और तुम्हारे पिताजी में कितनी दोस्ती थी। अगर तुम मुझे गिरफ्तार करोगे तो वे लोग क्या कहेंगे?

सिपाही—और अगर मैं तुम्हें नहीं गिरफ्तार करूँ तो मुझे दारोगाजी क्या कहेंगे?

अजपाल—अरे म्याँ, छोड़ो दारोगाजी को। दारोगाजी तो तुम्हारे बाप के दोस्त के लड़के नहीं हैं।

सिपाही—आज मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता। चलो।

अजपाल—अच्छा भाई, जब तुम यही चाहते हो तो मुझे गिरफ्तार कर लो। मैं भी यही समझूँगा कि मैं गिरफ्तार हो रहा हूँ। मगर यार, जरा यह तो बतलाओ कि गिरफ्तार होने के बाद मेरे साथ क्या होगा?

सिपाही—तुम पर जूते पड़ेंगे!

अजपाल—ऐं, जूते पड़ेंगे? चमड़े के जूते से हमारा धर्म भ्रष्ट हो जायगा या नहीं? और जूते से मारोगे तो चोट भी लगेगी!...खैर, तो उसके बाद क्या होगा?

सिपाही—उसके बाद तुम्हें जेल की हवा खिलावेंगे।

अजपाल—यार, हवा खिलाने के लायक तो शिमला-मंसूरी अच्छी जगह है। अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं हवा खाने के लिये वहीं चला जाऊँ।

सिपाही—अब तुम्हें सीधी तरह मेरे साथ चलना होगा। चलते हो या लगाऊँ हाथ?

अजपाल—अरे यार, ऐसा न करो। ये कामरेड बाबू यानी अनूपबाबू आ रहे हैं। इनसे इन्साफ करा लो।

[कामरेड अनूप का प्रवेश]

अनूप—क्या बात है?

अजपाल—भला बतलाइये तो, मैंने कब काँग्रेसवालों का साथ

दिया है ? उसी दिन मैंने आपसे कहा था कि इन लोगों का दिमाग फिर गया है। मैं रूस का दोस्त हूँ न ? आप तो जानते ही हैं।

अनूप हाँ-हाँ, मैं जानता हूँ, तुम काँग्रेसवालों के दोस्त हो।

अजपाल—अजी नहीं, मैं काँग्रेसवालों का दोस्त कब रहा ? मैंने उसी दिन आपसे कहा था कि मैं कम्यूनिस्ट पार्टी का मेम्बर हो जाऊँगा।

अनूप—नहीं-नहीं, तुम पार्टी के मेम्बर नहीं तुम जहन्नुम में जाओ। मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता।

[प्रस्थान]

अजपाल—[सिपाही से] देखिये, हमारे अन्तिम सहायक भी चले गये। अब तो आप मुझे गिरफ्तार कर ही लीजियेगा; लेकिन अब मेरी आखिरी मुराद पूरी कर दीजिये। [रोना] ओह, क्या बतलाऊँ, इस साल मेरे कितने काम बाकी रह गये। मैं कटहल की तरकारी नहीं खा सका। ओह, मुझे आलू का भरता कितना प्यारा था; मगर मैं नहीं खा सकूँगा, क्योंकि मैं गिरफ्तार हो रहा हूँ ! सिपाहीजी मुझे गिरफ्तार करके लिये जाते हैं। [आँसू पोंछना] हे हमारे भाई-बहन, हे हमारी जन्मभूमि, विदा ! अब मैं जेल जा रहा हूँ। अब तुम से मुलाकात नहीं होगी। हे भारत माता, अब मैं जेल जाता हूँ।

तू सुख से रहना। मेरे लिये जरा भी फ़िक्र न करना सिपाही भाई, मेरे प्राणप्यारे भाई; अब तो मैं जेल जा रहा हूँ। मेरी एक ही मुराद बाकी है। मैंने कभी सड़क पर गीत नहीं गाया था। आज भर मुझे सड़क पर एक गीत गा लेने दो। उसके बाद मैं जेल चला जाऊँगा।

सिपाही—अच्छा, जब तुम इस तरह रो रहे हो तो एक गीत गा सकते हो। मगर ज्यादा देर न लगाना।

अजपाल—नहीं भाई, बस पाँच मिनट में गाना खत्म कर दूँगा।

सिपाही—अच्छा, गाओ।

[अजपाल का गीत शुरू करना]

है गूँजता इस भूमि के कण-कण में ये नारा!
आजाद हो, आजाद हो ये देश हमारा!!

[इतने में बहुत-से लड़के लोग जुट जाते हैं और इसी गीत को कोरस बना लेते हैं:]

है गूँजता इस भूमि के कण-कण में ये नारा।
आजाद हो, आजाद हो ये देश हमारा॥
गांधी को दिया देश ने रक्षा का भार है
नेहरू के गले देश के आदर का हार है
माता ने दिया खोल के दामन पसार है
अब देशवासियों का दिल भी बेकरार है

बालक-युवक औ वृद्ध सबने आज पुकारा।
आजाद हो, आजाद हो ये देश हमारा।।

[एक भीड़ जम जाती है। गीत खत्म होता है। अजपाल लेकचर देना शुरू करता है :]

अजपाल—आज देश बेकरार है, आज गान्धी गिरफ्तार है। आज कुछ बोलना भी गुनाह है। मैं कहता हूँ कि आप इस सिपाही से पूछिये कि यह मुझे क्यों गिरफ्तार करने पर आमादा है? मैंने किसका घर जलाया है, मैंने किसकी इज्जत बिगाड़ी है, मैंने क्या किया है? मगर मुझे गिरफ्तार किया जाता है। इस सिपाही से पूछो, वह मुझे क्यों गिरफ्तार कर रहा है?

१ आदमी—क्यों सिपाहीजी, यह क्या करते हो? चलो यहाँ से।

सभी लोग—जाओ यहाँ से।

सिपाही—[अजपाल से]—अच्छा, आज मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ। फिर तुमसे समझूँगा।

अजपाल—हाँ भई, पीछे भेंट करना। अभी तो जान बच गई न!

[सिपाही का जाना]

अजपाल—चलो भाइयो!

[सबका गाते हुए जाना]

है गूँजता इस भूमि के कण-कण में ये नारा।
आजाद हो, आजाद हो ये देश हमारा।।

८

[आभा का कमरा। आभा और विलासी नर्तकी के विलास में है। आभा अपने मुँह से तबले का बोल निकालती है और विलासी उसी बोल पर नाचती है। सहसा विलासी नाच रोक देती है और कहती है :]

विलासी—छी:, तुमने मुझे कैसा बना दिया ?

आभा—बना दिया या सजा दिया ?

विलासी—काश मुझे भी तुम्हारी तरह रूप होता तो मैं भी सज-सँवर कर अच्छी लगती।

आभा—तुम्हारे पास रूप से भी अच्छी चीज है, सखी !

विलासी—क्या ?

आभा—कला !

विलासी—आज कला का कोई मोल नहीं है, बहन !

आभा—यह तो सारी दुनिया जानती है।

विलासी—आज की कला पैसों पर थिरक रही है।

आभा—कला की कीमत कला है। चाँदी-सोने से कला की कीमत नहीं आँकी जाती।

विलासी—मगर दुनिया तो धन को ही महान् मानती है।

आभा—चलो-चलो, अपना काम करो !

[आभा तबले का बोल बोलती है। विलासी उसी बोल पर नाचती है। इस वक्त नेपथ्य में केवल तबला ही बजना चाहिये। दूसरे बाजे की आवश्यकता नहीं। विलासी जरा नाच कर एकाएक नाच बन्द कर देती है और आभा के पास पहुँच कर उसके गले में हाथ डाल देती है।]

विलासी—सखी, एक बात पूछती हूँ !

आभा—पूछ भाई !

विलासी—तुम्हें उसकी कभी याद आती है ?

आभा—किसकी ?

विलासी—जिसके नाम के आगे नग है और जिसके पीछे इन्द्र है ?

आभा—नगेन्द्र ? (जैसे एकाएक चोट लग गई हो) ओहो··· इन बातों की याद मुझे न दिलाओ। आग न भड़काओ, नाग को न छेड़ो। जो बात बीत गई उसे भूल जाओ। मुझे उसकी याद न दिलाओ।

(उदास सिर झुका लेना)

विलासी—सखी, तुम नाराज हो गई ?

आभा—नाराज नहीं, सखी !

विलासी—तो बोलती क्यों नहीं ?

आभा—प्राणों में एक आग जाग उठी है, सखी। कलेजे में

धुआँ-सा भर गया है। मुझसे बोला नहीं जाता।... आह, मुझसे न बुलवाओ।

(सिर झुकाना)

[विलासी आभा से बोलती है; मगर आभा कोई जवाब नहीं देती]

विलासी—नाराज न हो सखी!...मुझे माफ कर दो!...मैंने जानबूझ कर तुम्हारा दिल नहीं दुखाया।...मुझे माफ कर दो।...बोलो, मुझे माफ कर दिया?...माफ कर दिया?...आभा!...नहीं बोलती?

आभा—विलासी!

विलासी—क्या?

आभा—तुम जेलर की लड़की हो।

विलासी—तो?

आभा—अगर तुम जेलर की असल बेटी होगी तो यह पत्र उसके पास पहुँचवा दोगी।

विलासी—आभा!

आभा—मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहती, मैं कुछ भी जानना नहीं चाहती। तुम्हें यह काम करना ही होगा।

विलासी—काम कठिन है आभा!

आभा—कठिनाइयाँ विजय प्राप्त करने के लिये होती हैं।

विलासी—खैर, तुम्हारा यह काम मैं किसी तरह कर दूँगी [चिट्ठी लेकर कंचुकी में छिपा लेती है] मगर तुम मुझसे नाराज न हो।

आभा—नहीं सखी, मैं तुमसे नाराज नहीं।

विलासी—तो मैं नाचती हूँ।

[विलासी नाचने के लिये तैयार होती है, लेकिन आभा तबले की बोली नहीं बोलती।]

विलासी—बोलो।

आभा—अब नहीं बोला जाता।

विलासी—तुम्हें मेरी कसम!

आभा—ऊ हूँ।

विलासी—यही बात!

आभा—मुझ से बोला ही नहीं जाता।

विलासी—तो इस चिट्ठी का जवाब मेरी बला लावेगी।

आभा—चिट्ठी का जवाब? इस चिट्ठी का जवाब मुझे मिलेगा? ...विलासी, बड़ी अच्छी हो तुम। मैं तेरी बलैया लूँ। चलो, नाचो।

[आभा तबले का बोल बोलती है। विलासी नाचती है। तनिक देर में आभा बोलना बन्द कर देती है, मगर विलासी नाचती ही रहती है। इसी बीच रामवृक्ष सिंह और अनूप आ जाते हैं। विलासी लजा कर भाग जाती है।]

रामवृक्ष—कौन लड़की है यह?

आभा—मेरी सखी है।

रामवृक्ष—बड़ा अच्छा नाचती है।

अनूप—वह भाग क्यों गई ?

आभा—आपने उसे क्या समझा है ? वह भी क्या कोई पेशेवर लड़की है जो जिसके-तिसके सामने नाचती रहे।

रामवृक्ष—जिसके-तिसके सामने ? आभा, तुम्हारा मतलब क्या है ? अनूप बाबू हम लोगों के मित्र हैं।

आभा—ये तो रूस के सिवा किसी के भी मित्र नहीं।

रामवृक्ष—नहीं, आप हमारी सरकार के भी मित्र हैं। हमारी सरकार को इनसे बड़ी-बड़ी सहायतायें मिल रही हैं। काँग्रेसवालों की तमाम गुप्त कार्रवाइयों की खबर ये तुरत सरकार के पास पहुँचा देते हैं।

आभा—दोस्त बनकर दगा देनेवाले ऐसे ही होते हैं।

अनूप [गुस्से से]—आभा !...

रामवृक्ष—नाराज होने की बात नहीं। आभा अभी नासमझ है। [पुकारना] आभा, इधर आओ; अनूप बाबू से हाथ मिला लो। इधर आओ। [वह आभा को लाने को उठता है कि चिट्ठी पर उसकी नजर पड़ती है] यह कैसी चिट्ठी ! [उठा लेता है] किसके पास लिखा गया है ? सिरनामा पढ़ता है और क्रोध से] हाँ...[टहलने लगता है, फिर चिट्ठी को खोल कर पढ़ता है। उसके बाद टुकड़े-टुकड़े करके उसे फेंक देता है] आभा, इसका समाचार अच्छा है। तुम्हें इसके पास चिट्ठी लिखने की जरूरत नहीं थी। मैं वाहियात लोगों से किसी तरह का सरोकार

रखना नहीं चाहता। मैं उन लोगों से सरोकार रखना नहीं चाहता जो देश का नाम लेते हैं, मगर देश के अमन के साथ दगाबाजी करते हैं। मुझे उन लोगों से कोई वास्ता नहीं, जो अनुशासन का नाम लेते हैं, मगर देश के शासन के खिलाफ उभड़ते हैं। [कुछ सोचता हुआ टहलता है, फिर एकाएक रुक कर आभा से कहता है:] आभा, अब एक बात छिपाई नहीं जा सकती। मैं वचनबद्ध हो चुका हूँ। इसी वर्ष अनूप के साथ तुम्हारा विवाह होगा। [आभा के पास जाकर] आभा! आभा!...अरे, यह तो बेहोश है।...आभा! आभा! आभा!.....

[आभा को उठा कर रामवृक्ष सिंह कोच पर लिटाता है। कामरेड अनूप रूमाल में यू-डी-कोलन की पट्टी तैयार करता है]

आभा—मैं कहाँ हूँ?

रामवृक्ष—तुम मेरे पास हो, बेटी! घबराने की बात नहीं।

आभा—पिताजी, आप मुझे माफ कर दें।

रामवृक्ष—माफ कर दिया।

अनूप—यह यू-डी-कोलन की पट्टी लगा लीजिये।

आभा—इसकी तो जरूरत नहीं। थैंक्स।

[पट्टी लेकर अलग फेंक देती है]

अनूप—नो मेन्शन! [घड़ी देख कर] मुझे माफ किया जाय।

आज हमारी Council of action की Meeting होनेवाली है। मैं जा रहा हूँ। नमस्ते।

रामवृक्ष—शाम को आ जाना, अनूप!

अनूप—बहुत अच्छा! [प्रस्थान]

आभा—पिताजी, मै आप से एक बात कहना चाहती हूँ।

रामवृक्ष—[कड़े होकर]—पहले मेरी बात सुन लो।···तुम अनूप का अपमान क्यों करती हो?···

आभा—[रो कर]—पिताजी!···

रामवृक्ष—चुप रहो। तुम्हें अनूप का सम्मान करना पड़ेगा, तुम्हें अनूप को शिरोधार्य करना होगा। उसके साथ तुम्हारे विवाह की बात तय हो चुकी है।

आभा—पिताजी!

रामवृक्ष—कुछ नहीं। मैं अपनी बात के खिलाफ कुछ भी नहीं सुनना चाहता। मैं तुम जैसी लड़कियों के मिजाज को जानता हूँ। तुम कहना चाहती हो, यह मेरे पसंद की बात नहीं हो रही है। मैं कहना चाहता हूँ, यही होना पड़ेगा। अपने पसद की बात कहीं नहीं होती, कभी नहीं होती। मुझे देखो, मैं सरकारी अफसर हूँ। मुझे दिन-रात कुत्तों की तरह मारा फिरना पड़ता है। ये हत्याकांड, यह जुल्म, यह उत्पीड़न और शोषण, तुम समझती हो मुझे पसंद होगा। मगर मुझे जानवरों की यह जिन्दगी

पसंद नहीं। मैं आदमियों को मारता फिरता हूँ; लेकिन आदमी-आदमी है, इसीलिये वह मुझे नहीं मारता। अगर इस देश में अपनी सल्तनत होती, अपने लोग हम पर शासन करते—उस वक्त मुझे काम करने में कितनी खुशी मिलती। मगर मुझे एक शरीफ-सम्पन्न आदमी की तरह जीना है, इसलिये खूँखार जंगली की तरह काम कर रहा हूँ और जानवरों की तरह शरीफ बन कर जी रहा हूँ। देखूँ, कबतक जी सकता हूँ। मैंने सबको सताया है, सबका बिगाड़ा है। कुछ हमारी जान के गाहक भी हो गये हैं। आज भी एक आदमी हमारी जान लेने के लिये हमारे घर में घुसा हुआ है।

आभा—घर में—कहाँ?

रामवृक्ष—इसी जगह। यहीं। (आलमारी दिखला कर) वहाँ।

आभा—यहाँ!

रामवृक्ष—हाँ, यहाँ। मगर तुम यहाँ से चली जाओ। जाओ।

[आभा जाकर छिप जाती है। रामवृक्ष पिस्तौल निकाल कर आलमारी के पास जाता है और आलमारी को खटखटाता है]

रामवृक्ष—चलो; मैं आ गया हूँ। बाहर निकलो।

[आलमारी खोल कर हाथ में छूरा लिये हुए गंगा बाहर आता है। रामवृक्ष सिंह पिस्तौल दिखलाता है।]

रामवृक्ष - खबरदार !...तुमने क्या समझा था कि सरकार की सी० आई० डी० मुफ्त में तलब लिया करती है ? तुमने क्या समझा था कि तुम हमारे घर में छिपे रहोगे और हमें खबर न होगी।

[गंगा एकाएक हमला करना चाहता है और रामवृक्ष सिंह पिस्तौल तानता है।]

रामवृक्ष—बस, खबरदार !

गंगा—खबरदारी अब खत्म हो चुकी, अफसर ! खबरदारी की अब जरूरत नहीं। तुम समझते होगे कि मैं तुम्हें मारने के लिये आया हूँ—गलत समझते हो, अफसर !—एक कुचला हुआ गरीब देहाती तुम्हें कैसे मार सकता है ? वह यहाँ मरने के लिये आया है। वह अपमानित होकर जिन्दा नहीं रह सका, तो तुम्हारे पास मरने के लिये चला आया। मैं जानता हूँ, मैं तुम्हें नहीं मार सकता। एक गरीब किसान किसी चूहे को भी मारने की ताकत नहीं रखता। मगर काश, मैं तुम्हें मार सकता, इस छूरे से चीर कर तुम्हारे कलेजे का गर्मागर्म खून पी सकता ! (हँस कर) मगर तुम मुझे मारोगे और मैं मर जाऊँगा। (हँसता है) ह: ह: ह: मरने में कितना मजा आवेगा ? (छूरा लेकर झपटना चाहता है) मगर यह कमजोर का आखिरी हमला है—एकदम आखिरी हमला !

रामवृक्ष—(पिस्तौल तान कर) बस वहीं खड़े रहो !

गंगा—यह छोटी-सी पिस्तौल क्या दिखलाते हो, अफसर ? अगर मर्द हो, तो हमें भी एक पिस्तौल दे दो। अगर जवाँमर्द हो, तो उस पिस्तौल को भी रख दो। सामने आ जाओ। मैं भी अपना छूरा रख दूँगा। आओ, बहादुरों की तरह फैसला करो। यह पिस्तौल क्या दिखलाते हो ? तुम अमीरों के बच्चे हो। तुमने हमेशा मक्खन-मलाई खाई है। आओ, मर्दों की तरह सामने आओ, और देखो कि एक किसान की साग-रोटी में कितनी ताकत है। आओगे इस तरह ? है तुममें इतनी हिम्मत ?

[आगे बढ़ना चाहता है]

रामवृक्ष—खबरदार, वहीं खड़े रहो !

गंगा—(आगे बढ़ता हुआ) खबरदारी की अब कोई जरूरत नहीं है, अफसर। अब हमारे पास खबरदार होने के लिये कुछ भी नहीं बचा। (धीरे-धीरे आगे बढ़ता है) हमारा गाँव उजड़ गया, हमारी बहनों की इज्जत लूट ली गई, हम मुफलिस हो गये, हम अपमानित होकर अब यहाँ मरने के लिये आये हैं। [छूरा उठाकर हमला करता है। पिस्तौल छूटती है। गंगा लड़खड़ाता है] ओह !····· हम आखिरी दम तक तुम्हें मारने के लिये आगे बढ़ेंगे।···हम तुम्हें मारेंगे। हम तुम्हें·····[मूर्छा

आना चाहती है, वह अपने को रोकता है।]···नहीं-नहीं, हम तुम्हें जरूर मारेंगे। जब गान्धी जेल से लौट आवेगा और श्रीकृष्ण सिंह हमारा मंत्री होकर तुमसे सवाल करेगा, तब तुम उससे कह देना कि वह छोटा-सा जानवर इतना कुचला गया था कि तुम्हारे अहिंसा के सिद्धान्तों को नहीं मान सका। उससे कह देना कि वह लोहे का छोटा सा टुकड़ा लेकर पिस्तौल के सामने चला आया। [छूरा उठा कर झपटता है] सम्भल जाओ !···[पिस्तौल छूटती है और वह बड़े जोरों से चिल्ला उठता है] ·····आह !·····तुमने मुझे मार दिया। तुमने मुझे मार दिया।···मगर मैं आखिरी दम तक तुमसे बदला लूँगा, आखिरी···दम···तक···तुमसे··· लड़ूँगा। तुमने मेरे सारे गाँव को तबाह किया है, मैं तुम्हें मारूँगा। (छूरा उठा कर लपकना।) पिस्तौल चलती है। गंगा गिरता है, फिर उठता है नहीं-नहीं मै तुम्हें मारूँगा। मैं तुम्हें·····जरूर···मारूँ···गा ! [लड़खड़ा कर गिर जाना, फिर उठना] मैं···तुम्हें····· आह !·····[लड़खड़ा कर गिरना। फिर उठने की चेष्टा] ···मैं···मैं···मैं···[शान्ति]

[रामवृक्ष सिंह थोड़ा टहलता है, फिर टेलीफोन के पास जाकर रिसीवर उठा लेता है।]

रामवृक्ष—Put me to double one not···Hullo, this is

myself Rambriksha Sinha speaking....well, Inspector, there is a dead body in my house.....अरे भई, वह मेरा खून करने के लिये आया था।.....हाँ-हाँ, मारा गया।...लाश मँगवा लो.....इम्बुलेन्स कहाँ गया है?...Dom this, जल्दी एम्बुलेन्स भेज दो।.....Yes, All right.... Thank you..... ...

[रिसीवर रख कर टहलता है। एकाएक बदहवास आभा की ओर उसका ध्यान जाता है।]

रामवृक्ष—आभा!.....तुम यहीं हो? डरने की बात नहीं है, आभा।

आभा—पिताजी! [रोना]

[दो सिपाही आते हैं, अफसर को सैल्यूट करते हैं, अफसर सलाम का जवाब देता है। उसके बाद वे लोग लाश को उठा कर ले जाते हैं।]

रामवृक्ष—तुम अभीतक रो रही हो, आभा!

आभा—पिताजी, मैं यह धन-दौलत नहीं चाहती, मुझे ऐशो-इशरत की जरूरत नहीं, मैं सम्मान नहीं चाहती, प्रतिष्ठा नहीं चाहती। बस, मैं आदमी की तरह जीना चाहती हूँ, मैं अपनी तबीयत से रहना चाहती हूँ।..... पिताजी!.....

रामवृक्ष—मुश्किल है, आभा!

[टेलीफोन की घंटी बजती है। रामवृक्ष सिंह रिसीवर उठाता है।]

रामवृक्ष—Sinha speaking. Good evening, Doctor···· What's the matter ?····· ऐं, जिन्दा है ?···भई, सूअर बड़े कठजीव होते हैं। जल्दी मरते नहीं।··· बोल भी सकता है ?.....

आभा—क्या वह जिन्दा है ? वह जिन्दा है ?

रामवृक्ष—हाँ।

आभा—मैं उसके पास जाऊँगी।

रामवृक्ष—नहीं जाना होगा।

आभा—मैं उसके पास जाती हूँ।

रामवृक्ष—·····जाओ। मगर वापस आने की जरूरत नहीं।

आभा—अच्छी बात है पिताजी; मैं उसके पास जरूर जाऊँगी।

रामवृक्ष—जाओ।

[आभा का प्रस्थान। रामवृक्ष सिंह खेद और क्रोध का नाट्य करता है। उसके बाद टेलीफोन का रिसीवर उठा कर रख देता है।]

पर्दा

६

[जेल। अजपाल के पास सारंगी-वारंगी कुछ भी नहीं; लेकिन वह झूठमूठ सारंगी बजाता हुआ आता है। उसके पीछे-पीछे मुनुआँ झूठमूठ तबला बजाता हुआ आता है। दोनों बैठ जाते हैं और इस तरह मन लगाकर बजाते हैं जैसे सचमुच बाजा ही बजा रहे हों।]

मुनुआँ—अरे वाह उस्ताद !

अजपाल—अरे वाह रे मेरे मिट्टी के शेर !

मुनुआँ—अब दो गुन छेड़ दो।

अजपाल—अबे यहाँ तीन गुन बज रहा है।

मुनुआँ—अब ठाह पर आओ।

अजपाल—अभी ठहर, यहाँ अन्तरा बज रहा है।

मुनुआँ—अब ठाह पर आओ उस्ताद !

अजपाल—यह आया !

[दोनों उसी प्रकार धुन में बजा रहे हैं। आसपास दूसरे-दूसरे कैदी जुटते हैं और गाने लगते हैं]

नाम भजा सोई जीता जग में नाम भजा सोई जीता
हाथ सुमिरनी बगल कतरनी पढ़े भागवत गीता

हृदय सिद्ध किया नहिं बौरे कहत-सुनत दिन बीता
आन देव की पूजा कीन्हीं गुरु से रहा अतीता
धन-जोबन तेरा यहीं रहेगा अन्त समय चल रीता
बावरिया ने बावर डारी फन्द जाल सब कीता
कहैं कबीर काल आ खैहें जैसे मृग को चीता

[एक वार्डर आ जाता है। सभी कैदी खिसक जाते हैं। अजपाल और मुनुआं अपनी धुन में मस्त हैं। बजाये चले जा रहे हैं।]

मुनुआं—अरे वाह उस्ताद!

अजपाल—कहो मेरे मिट्टी के शेर!

मुनुआं—तीन गुन छेड़ दो!

अजपाल—यह छेड़ा!

[वार्डर दोनों के बीच बैठकर दोनों का कन्धा पकड़ता है। दोनों मुँह बा देते हैं।]

वार्डर—यह क्या हो रहा है?

अजपाल—अरे यार, जरा शगल कर रहा हूँ।

वार्डर—यह शगल की जगह नहीं। जेल है, जेल।

अजपाल—अरे भाई, जेल है तो क्या मैं शौक से यहाँ थोड़े ही आया हूँ? तुम्हारे ही भाई-बन्दों ने मुझे पकड़ा। मैं उनसे कहता ही रह गया कि मुझे न पकड़ो। मगर वे थे कि मानते ही नहीं थे। उसके बाद हाकिम से कहा—मुझे छोड़ दीजिये, मैं जेल जाना

नहीं चाहता। मगर हाकिम भी वैसा ही अक्लमंद था। सीधे ४० साल की सजा ठोक दी।

वार्डर—मगर तुम यहाँ शगल नहीं मना सकते।

अजपाल—अब हमलोगों के लिये यही घर-दरवाजा है तो शगल मनाने कहाँ जाऊँगा ?

वार्डर—तुम जहन्नम में जाओ, मगर यहाँ शगल नहीं मना सकते।

अजपाल—इसीलिये मैं यहाँ नहीं आना चाहता था।

वार्डर—तीन महीने तक तुम लोगों को सेल में रख दिया जाय और मालूम हो जाए।

अजपाल—मालूम तो अभी भी हो रहा है। मगर मालूम होने से क्या होता है। लाचार की बात लाचारी में ही खत्म होती है।

मुनुआँ—मुश्किल तो यह है कि ये लोग जेल से बाहर निकलने भी नहीं देते और जेल में गाना-बजाना भी नहीं करने देते। (अजपाल से) लो उस्ताद, मैं अपना तबला रख देता हूँ।

[झूठमूठ तबला रखना]

अजपाल—ठीक है भाई, मैं भी अपनी सारंगी रख देता हूँ।

[झूठमूठ सारंगी रखना]

मुनुआँ—उस्ताद अब गाना-बजाना बन्द !

अजपाल—सारा शगल बन्द !

मुनुआँ [वार्डर को बतला कर] इस भले आदमी ने मेरा तबला भी ले लिया।

अजपाल—[वार्डर को दिखला कर] इसने मेरी सारंगी भी रखवा ली।

वार्डर—मगर तुमलोगों को सारंगी और तबला है कहाँ ?

अजपाल—यह रही हमारी सारंगी। (झूठमूठ उठा कर बजाता है) सुन लिया न ?

वार्डर (मुनुआँ से)—और तुम्हारा तबला ?

मुनुआँ—यह रहा मेरा तबला। (झूठमूठ बजाता है) कहो, कैसा रहा ?

वार्डर—खाक रहा। (हंटर उठा कर) बदमाशो, तुमलोग मुझ से दिल्लगी करते हो ? मारे हंटर के तुमलोगों की बखिया उधेड़ दूँगा।

मुनुआँ—अरे रे, मेरा तबला न तोड़िये।

वार्डर—ठहर बदमाश !

[मारना चाहता है कि नगेन्द्र आ जाता है]

नगेन्द्र—क्यों, क्या बात है ?

वार्डर—देखिये, ये लोग बदमाशी कर रहे हैं।

अजपाल—बदमाशी नहीं साहब, हमलोग जरा यों ही शगल मना रहे थे।

मुनुआँ—और इनके साथ मैं भी गाना-बजाना कर रहा था।

नगेन्द्र [वार्डर से]—गाना-बजाना कोई कसूर नहीं।

वार्डर—कसूर क्यों नहीं ? कसूर है और हजार बार है।

नगेन्द्र—खबरदार !

वार्डर—अजी बाबूजी, ये लाल-लाल आँखें कहीं दूसरी जगह दिखाना। हम तुम्हारे रोब में नहीं आनेवाले हैं।

नगेन्द्र—रोब की बात नहीं है, वार्डर। अगर ये गीत गा रहे थे तो वह कोई कसूर नहीं था।

वार्डर—जा जा, निकल यहाँ से। अब तुम्हारी काँग्रेस की मिनिस्टरी आनेवाली है। अपनी मिनिस्टरी आने दो, फिर हमें पीस कर पी जाना, मार डालना—समझ गये ?

नगेन्द्र—ऐ सरकारी नौकरों, काँग्रेस की मिनिस्टरी से तुम समझते हो, हमारा राज्य होगा। तुम समझते हो, हमारे हाथों में हुकूमत होगी। गलत बात है। हुकूमत हमारे हाथों में नहीं, तुम सरकारी नौकरों के हाथ में रहेगी। फर्क अगर होगा तो यही होगा कि तुम पर जो अंगरेज हुकूमत कर रहे हैं उसकी जगह पर एक पबलिक का नुमाइन्दा आकर बैठेगा। वह हुकूमत तुम्हारी होगी, वह राज्य तुम्हारा होगा। अगर तुम समझते हो कि हम तुम्हें मिटाने के लिये लड़ रहे हैं, तो बिलकुल गलत समझते हो। हम तुम्हें मिटाने के लिये नहीं, तुम्हें बनाने के लिये अंगरेजी सरकार से लड़ रहे हैं और जेलों के अन्दर पड़े हुए हैं।

वार्डर—मगर मुझे तो समझाया जाता है कि काँग्रेसी हुकूमत में तुम बरबाद कर दिये जाओगे।

नगेन्द्र—अब तुम्हारी अंगरेजी सरकार का पासा पलट चुका। अगर जनता की भलाई की दृष्टि से काम करोगे तो संसार में कोई भी ऐसी शक्ति नहीं जो तुम पर ऊँगली उठा सके। अब यहाँ श्रीकृष्ण सिंह का जमाना आनेवाला है। उसने हमेशा तुम्हारे अत्याचारों को भुलाया है, उसने हमेशा आगे बढ़ कर तुम्हें अपने गले से लगाया है, हमेशा उसने तुम्हें अपना दाहिना हाथ बतलाया है। उसकी अधीनता में कोई भी तुम्हारा बाल बाँका नहीं कर सकता।

वार्डर—नगेन्द्र बाबू, आप तो बड़ी अच्छी बात कह रहे हैं। हमने तो समझा था कि हम सरकारी नौकरों ने जुल्म किया है, हम पीस दिये जायँगे।

नगेन्द्र—भाई मेरे, सरकारी काम जनता का सब से बड़ा काम है। हम जानते हैं कि तुम आजतक किसके इशारे पर काम करते आये हो। हमपर अत्याचार करनेवाले तुम नहीं थे। हमपर जुल्म ढानेवाले तो विलायत में पड़े हुए हैं और अपने पदों से भी अलग हो चुके हैं। तो अगर हम चर्चिल और एमरी को सजा नहीं दे सकते, तो फिर तुम्हें सजा देना बेकार होगा। तुम हमारे भाई हो; तुम्हें सजा देकर क्या हो सकेगा ?

वार्डर—नगेन्द्रबाबू, मुझे माफ करो।

नगेन्द्र—तुम हमारे भाई हो ! [गले से लगाना]

अजपाल—हाँ, तुम हमारे भाई हो। अबसे हमें मारपीट न किया करना। मारपीट किया करोगे तो यह रिश्ता टूट जाएगा—समझ गये ? आओ, हम भी तुम्हें गले से लगा लें।

[गले मिलना]

अजपाल—[मुनुआं से] लो भाई, तुम भी यह नया रिश्ता खयाल कर लो। ये जितने सरकारी नौकर हैं, सब तुम्हारे भाई हैं। देखते क्या हो, जल्दी से लपककर इन्हें गले से लगा लो।

मुनुआं—मैं यह काम नहीं कर सकता।

नगेन्द्र—क्यों ?

मुनुआँ—इन लोगों ने हमपर अत्याचार किया है, इन्होंने हमारी जिन्दगी दोजख बना दी है। हम इनके पापों को नहीं भूल सकते।

नगेन्द्र—तो तुम असल अपराधी को पकड़ो।

मुनुआँ—असली अपराधी कौन है ?

नगेन्द्र—चर्चिल और एमरी।

मुनुआं—वे हमारी पहुँच के बाहर हैं।

नगेन्द्र—तो जब तुम भारतवर्ष के उन शत्रुओं को नहीं पकड़

सकते, जब उन्हें खुली अदालत में सजा नहीं दिला सकते, इन बिचारों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?

मुनुआं—माफ कीजियेगा, मैं अभीतक असल बात नहीं समझ सका था। (वार्डर से) आओ भाई, मुझे माफ करना।

[गले लगाना]

अजपाल—वाह, भरत मिलाप का क्या मनोहर दृश्य है।

[एक वार्डर का आना]

वार्डर—नगेन्द्र बाबू, आपको जेलर साहब बुला रहे हैं।

नगेन्द्र—चलो।

[दोनों का जाना]

अजपाल—जिसे देखो वही नगेन्द्र बाबू को बुला रहा है। मुझे तो कोई बुलाता ही नहीं है। खैर।

पर्दा

०

[सड़क। कामरेड अनूप का प्रवेश।]

अनूप—वह आभा जा रही है। [पुकारना] आभा! आभा!

आभा—[आकर] क्या है?

अनूप—मैं तुम्हें मुबारकबादी देता हूँ, आभा। अब तुम्हारी काँग्रेस की मिनिस्टरी हो रही है।

आभा—इसके लिए मुबारकबादी की कोई जरूरत नहीं थी। मुबारकबादी तो उन्हें मिलनी चाहिये थी जो शहीद हो गये हैं। मुबारकबादी के हकदार वे हैं जिनके लाल खून से रंगे हुए वोट लाल बक्सों में गिरे हैं।

अनूप—वह बात नहीं है, आभा। मैं मुबारकबादी तुम्हें इसलिये देता हूँ कि तुम जीत चुकी हो, मैं हार गया हूँ।

आभा—आप भूलते हो, अनूपबाबू। अभी काँग्रेस की जीत नहीं हुई है। काँग्रेस की जीत तो तब होगी जब मनुष्य मशीनों से परित्राण पावेगा। हर घर में चर्खे चलेंगे, हर व्यक्ति स्वावलंबी होगा, हरेक गाँव के लोग खुशहाल होंगे। जबतक यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति पूरी तरह आजाद नहीं होता तबतक काँग्रेस का काम भी पूरा नहीं होता।

अनूप—इसीलिये मैं कहता हूँ, तुम्हें साम्यवाद को अपनाना होगा।

आभा—तुम्हारा साम्यवाद समाज को स्वतंत्र करता है; लेकिन व्यक्ति को आजादी नहीं देता। हम हरेक व्यक्ति की आजादी के लिये लड़ रही हैं।

अनूप—रूस संसार के सामने एक आदर्श की तरह खड़ा है।

आभा—संसार का सबसे बड़ा आदर्श गान्धी हमारे ही बीच जीता-जागता मौजूद है।

अनूप—गान्धीवाद एक थियोरी है।

आभा—उसके अहिंसा और सत्याग्रह की परीक्षा हो चुकी है।

अनूप—रूस साम्यवाद के सिद्धांतों को अपनाकर कहाँ से कहाँ जा पहुँचा और तुम अभीतक थियोरी ही समझाती फिर रही हो।

आभा—यह अपने विश्वास की बात है अनूपबाबू। तुम छ महीने की राह चलते हो, मैं साल भर का रास्ता अपनाती हूँ।

अनूप—मैं कहता हूँ काँग्रेस और लीग एक हो जाय।

आभा—पानी और आग एक साथ नहीं रह सकती।

अनूप—अगर पानी कम हो और आग ज्यादा हो, तो पानी भाफ बनकर उड़ जायगा।

आभा—मगर आसमान उस पानी को फिर बरसा देगा। भारत एक है और एक ही रहेगा।

अनूप—तुम हमेशा आसमान में उतराती हो और मैं अनुभव की बातें करता हूँ।

आभा—मुझे अपने ऊपर विश्वास है।

अनूप—मैं हमेशा अनुभव का कदम उठाता हूँ।

आभा—मगर तुम्हारे अनुभव तुम्हीं को परास्त कर देते हैं।

अनूप—कैसे ?

आभा—अभी तुम कह रहे थे कि तुम जीत गई, मैं हार गया।

अनूप—आभा तुम बिजली हो। खैर।

आभा—अच्छा अब मैं जाती हूँ। आज्ञा है न ?

अनूप—कैसे कहूँ; इच्छा नहीं होती।

आभा—जबरदस्ती किसी को रोकने से कोई फायदा नहीं।

अनूप—अच्छा, एक बात तुम मुझे बतला सकती हो ?

आभा—क्या ?

अनूप—नगेन्द्र कबतक आवेगा ?

आभा—मुझे मालूम नहीं।

अनूप—उसको चिट्ठियाँ आती होंगी।

आभा—वे मेरे पास पत्र नहीं लिखते। मगर तुम यह बात क्यों पूछ रहे हो। किस हक से।

अनूप—बुरा न मानो, आभा। हमलोग उनसे जेल में मिलने चल सकते हैं।

आभा—क्या तुम्हें भी उनसे कोई काम है ?

अनूप—उनसे मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि वे कांग्रेस और लीग की एकता का उद्योग करें।

आभा—तब मैं उनसे मुलाकात नहीं कर सकती।

[प्रस्थान]

अनूप—आभा ! आभा !.....ओह, जनता अन्धी हो गई है। वह मेरी एक भी सुनना नहीं चाहती।

[विद्या का प्रवेश]

विद्या—नमस्ते अनूपबाबू; आपने इधर आभा को देखा है ?

अनूप—देखा तो है।

विद्या—किधर गई ?

अनूप—अभी-अभी तो इधर गई है।

विद्या—अच्छा, तो नमस्ते ! (चली)

अनूप—मालूम होता है मुझसे बातें करना भी पाप है।

विद्या—आपका रास्ता दूसरा है, मेरी राह दूसरी है।

अनूप—मेरी समझ में भी नहीं आता कि सरकारी अफसरों की लड़कियाँ काँग्रेसी क्यों हो जाती हैं !

विद्या—मेरी समझ में भी नहीं आता कि करोड़पतियों के लड़के कम्यूनिस्ट क्यों हो जाते हैं !

अनूप—तुम मुझसे घृणा करती हो, विद्या ?

विद्या—काँग्रेसी तो किसी से घृणा नहीं करते।

अनूप—तुम हृदय-परिवर्तन पर विश्वास करती हो ?

विद्या—जरूर करती हूँ।

अनूप—तो मेरे हृदय में भी एक परिवर्तन हुआ है। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।

विद्या—मगर मेरे हृदय में तो कोई वैसा परिवर्तन नहीं हुआ। नमस्ते। (चलना)

अनूप—रुक जाओ विद्या। जब तुम मेरे हृदय के परिवर्तन पर विश्वास नहीं करती, तो मालूम होता है कि तुम्हारा विश्वास सत्य पर से भी उठ गया है।

विद्या—मैं कहती हूँ कि तुम्हारा हृदय तो परिवर्तित हो चुका; मगर मेरा हृदय वैसा ही है।

अनूप—कैसा ?

विद्या—प्रतिज्ञा की तरह। मैं अपनी सारी जिन्दगी ग्राम-सुधार में बिताऊँगी। यदि मैं विवाह करूँगी भी तो किसी हरिजन युवक से करूँगी।

अनूप—हरिजन युवक से? क्या यह भी सम्भव है ?

विद्या—यही तो वास्तविक साम्यवाद है। करोड़पति का लड़का अनूप अगर एक अफसर की लड़की आभा की आराधना करता है तो यह कोई खास बात नहीं है। वह करोड़पति का बेटा यदि किसी गरीब हरिजन की लड़की से शादी करे तो वह एक आदर्श होगा।... अनूपबाबू, मुझे माफ करेंगे। मैं बहुत स्पष्ट बोल रही हूँ।

अनूप—गान्धी ने तुमलोगों का दिमाग खराब कर दिया है।

विद्या—एक दिन गान्धी सारे भारतवर्ष का दिमाग खराब कर डालेगा।

अनूप—यह सब असम्भव बात है।

विद्या—करने से सब कुछ सम्भव हो जाता है।

अनूप—अव्यावहारिक बातों से बचे रहना ही अच्छा है। क्या यह कभी सम्भव है कि लोग हरिजन लड़कियों से शादी करने लगें? क्या यह सम्भव है कि भारतवर्ष में घर-घर चर्खे चलने लगेंगे? क्या यह कभी सम्भव है कि भारतवर्ष के सात लाख गाँव सभी भाँति स्वतंत्र हो जायेंगे?

विद्या—करने से सभी कुछ सम्भव हो जाता है, अनूपबाबू।

अनूप—जमाना पलट चुका है। दुनिया तुम्हारे गान्धी के सिद्धान्तों पर नहीं टिक सकती। उसे आसान रास्ता चाहिये।

विद्या—आप अपने व्यवहारों में अड़े रहिये। मैं भी अपने विचारों पर खड़ी हूँ।...
तो अब आज्ञा है न?

[अजपाल का प्रवेश]

अजपाल—वाह, आप तो अनूप बाबू हैं। नमस्ते-नमस्ते। कहिये, मिजाज तो अच्छे हैं।

अनूप—हाँ, यहाँ तो कुशल है, भई। अपनी कहो। रहे तो मजे में?

अजपाल—अजी साहब, जेल में भी कोई मजे में रहता है? मालूम होता है आपने मजे मे ही रहने के लिये मुझे गिरफ्तार करवा दिया था? अभी आपको देख रहा हूँ तो मेरी एँड़ी की लहर चोटी पर चढ़ी जा रही है। यदि मैं अहिंसा का सिद्धान्त नहीं मानता होता तो अभी तक आपके ऊपर हमला कर चुका होता! ऊपर से अब नया रिश्ता पैदा हो गया है कि सरकारी अफसर अपने भाई हैं।

विद्या—आप क्या कह रहे हैं, इन्होंने आपको पकड़वा दिया था।

अजपाल—अजी देवी जी.....अरे राम, नमस्ते देवी जी! .....इन्हों ने किसको नहीं पकड़वाया। सब से पहले तो ये नगेन्द्र बाबू के पीछे पड़े। उसके बाद आधी रात के समय इन्होंने मुझे पकड़वा दिया। मगर आप?.....माफ कीजिये, इनका.....कोई ...मतलब नजदीकी रिश्तेमन्द तो नहीं है।

विद्या—छीः, मैं ऐसे आदमियों से घृणा करती हूँ।

अजपाल—चलिये, इनसे घृणा करनेवाले हम-आप दो आदमी हो गये।

विद्या—छीः अनूप बाबू, मैं आपको इतना नीच न समझती थी। (प्रस्थान)

अजपाल—सारा जमाना आपकी करतूतों पर थूक रहा है। अपने इन्हीं सिद्धान्तों के बल पर आप इतना

अकड़ते फिरते हैं। क्या कहूँ·····अच्छा खैर, मैं आपसे कुछ न कहूँगा। मगर भई, वाहरे मेरे कामरेड अनूप बाबू! नमस्ते। जय गोपाल जी की।

(प्रस्थान)

अनूप—दुनिया में जितनी आसानी से बदनामी मिलती है उतनी आसानी से नेकनामी नहीं मिलती। जितनी फिटकारें बरसती हैं उतना गौरव नहीं मिलता।

(प्रस्थान)

पर्दा

११

[कमरा। रामवृक्ष सिंह और आभा। रामवृक्ष सिंह उठ कर रेडियो खोल रहे हैं। विद्या का प्रवेश।]

आभा—आओ विद्या, रेडियो पर खबरें हो रही हैं।

विद्या—इसीलिये तो आई हूँ।

आभा—देखें कांग्रेस के कौन-कौन-से लोग मिनिस्टर होते हैं।

विद्या—जगलाल चौधरी के बाद से अब कैदियों का छूटना भी आरम्भ हो गया है। अभी-अभी एक सज्जन जेल से लौटे आ रहे थे।

रामवृक्ष—अब तो वक्त हो गया न ?

आभा—(घड़ी देखकर) हाँ।

[रामवृक्ष सिंह रेडियो खोल देता है और स्वयं लौट कर एक कुर्सी पर बैठता है।]

रेडियो—अभी रात के नौ बजे हैं। मैं, ४.३५ मीटर से बोल रहा हूँ। अब आपको खास-खास खबरें बतलाई जा रही हैं। यू० पी०, सी० पी०, बिहार, फ्रंटियर प्राविन्स, बम्बई, मद्रास आदि सभी सूबों में काँग्रेस की वजारतें कायम हो गईं। सूबे बिहार में ६ वजीर चुने गये हैं। आनेरेबल प्राइम मिनिस्टर श्रीकृष्ण सिंह

पोलिटिकल, जुडिशियल और जेल के महकमों के वजीर हुए हैं। डा० महमूद को डेवलपमेंट डिपार्टमेंट दिया गया है। आचार्य बदरीनाथ वर्मा को एडुकेशन और इन्फारमेशन डिपार्टमेंट की वजारत मिली है। श्री जगलाल चौधरी ने अपने पुराने महकमे आबकारी का काम सम्भाला है। बिहार-विभूति बाबू अनुग्रह नारायण सिंह ने फाइनान्स, लेबर, सिविल सप्लाई और प्राइस कंट्रोल के डिपार्टमेंट का काम अपने हाथ में लिया है। बाबू रामचरित्र सिंह को इलेक्ट्रिफिकेशन, आबपाशी और लेजिस्लेटिव डिपार्टमेंट दिये गए हैं। छोटानागपुर के शेर जनाब कृष्णवल्लभ सहाय को रेवेन्यू और जंगल का महकमा दिया गया है। पंडित विनोदानन्द झा को लोकलसेल्फ और मेडिकल के महकमे मिले हैं। जनाब अब्दुल कयूम अन्सारी रोड और बिल्डिग, होम इन्डस्ट्री और पी० डबल्यू० डी० के वजीर हुए हैं।

सूबे बिहार की वजारत को अपने हाथों में लेते हुए जनाब श्रीकृष्ण सिंह ने फर्माया है कि जितने भी सियासी कैदी इस सूबे की जेलों में बन्द हैं उन सभी कैदियों को बाइज्जत रिहा किया जायगा। जनाब जगलाल चौधरी ने फर्माया कि बिहार सरकार को आबकारी से जो आमदनी है वह बिल्कुल immoral

है इसलिये हम जल्द से जल्द शराबबन्दी शुरू करेंगे।.....

[रामवृक्ष सिंह रेडियो बन्द करके उदास बैठ जाता है]

रामवृक्ष—पता नहीं कांग्रेस हमारे साथ कैसा सलूक करेगी।

आभा—पिताजी, आप उदास न हों। कांग्रेस के पास बदला लेने की नीति नहीं है।

रामवृक्ष—तुम नहीं जानती आभा, कि हमने जनता पर कितने अत्याचार किये हैं।

विद्या—फिर भी काँग्रेस आपको माफ करेगी।

रामवृक्ष—कैसे कहती हो।

विद्या—काँग्रेस के पास प्रेम की नीति है। काँग्रेस के पास बदला लेने के सिद्धान्त नहीं हैं।

रामवृक्ष—लड़की, तुम पागल हो गई हो। हमने इतने अत्याचार किये हैं कि जिसे देखकर पत्थर भी पानी होकर बह जायगा। हमारे अत्याचारों को देख कर सूरज भी रात के अन्धेरे में मुंह छिपा लेगा। फासिस्त भी हमारे अत्याचारों को सुनकर सिहर उठेंगे।

आभा—मगर फिर भी काँग्रेस आपको माफ करेगी।

विद्या—आप श्रीकृष्ण सिंह पर कोई शंका न करें।

रामवृक्ष—लड़कियो, मैंने दुनिया देखी है। मैं जानता हूँ कि कहने का सिद्धान्त दूसरा होता है और करने का

सिद्धांत बिल्कुल दूसरा होता है। तुम सिद्धांतों की बात कहती हो, मैं देखता हूँ कांग्रेस हमें बरबाद कर देगी।

विद्या—आपने हजारों-लाखों को बरबाद किया है। अगर काँग्रेस आपको बरबाद करेगी तो वह कोई नया काम नहीं होगा। मैं जानती हूँ कि काँग्रेस आपको बरबाद कर सकती है, मैं जानती हूँ कि आप जैसे लोगों को बरबाद होना चाहिये; लेकिन मैं यह भी जानती हूँ कि काँग्रेस आपको बरबाद नहीं करेगी, श्रीकृष्ण सिंह आपसे बदला नहीं लेगा।

रामवृक्ष—ओह, यदि काँग्रेस ऐसा कर सकती!

आभा—काँग्रेस ऐसा ही करेगी, पिताजी!

[नगेन्द्र का प्रवेश]

नगेन्द्र—[सबसे] नमस्ते!

रामवृक्ष—तुम आ गये नगेन्द्र? वाह!

आभा—(नगेन्द्र से) एकाएक?

नगेन्द्र—आज आनरेब्ल प्राइम मिनिस्टर श्रीकृष्ण सिंह का युग है। आज उन्होंने बिहार का मंत्रित्व सम्भाला और आज ही हमलोगों को रिहाई मिल गई। आज बिहार में कोई भी राजनैतिक बन्दी नहीं है।

रामवृक्ष—मगर तुम्हारा श्रीकृष्ण सिंह मुझे पीस डालेगा।

नगेन्द्र—श्रीकृष्ण सिंह महान है। वह बदला लेने का सिद्धान्त नहीं मानता।

रामवृक्ष—तब ? वह हमारे साथ कैसा व्यवहार करेगा ?

नगेन्द्र—प्रेम का।

रामवृक्ष—मेरे साथ भी प्रेम का व्यवहार होगा ? नगेन्द्र तुम पागल तो नहीं हो गये हो ?

आभा—पिताजी का खयाल है कि काँग्रेस के प्रेम के सिद्धान्त में भी बदला लेने का प्रपंच छिपा हुआ है।

नगेन्द्र—संसार में केवल काँग्रेस ही एक ऐसी संस्था है जिसके पास कपट की नीति नहीं।

रामवृक्ष—खैर, जो होगा उसे भुगतना ही पड़ेगा; मगर नगेन्द्र, मेरे पास एक चिन्ता है, मुझे उस चिन्ता से मुक्त कर दो।

नगेन्द्र—कौन-सी चिन्ता ?

रामवृक्ष—(आभा के सिर पर हाथ रख कर) मेरे पास एक-मात्र यही चिन्ता है। इस अल्हड़, जिद्दी और नादान चिन्ता का भार तुम सम्भाल लो। (दोनों का हाथ मिला देता है)

विद्या—चिन्तामणि हीरा पाने के लिये बधाई दे रही हूँ, नगेन्द्र बाबू !

नगेन्द्र—धन्यवाद !

विद्या—(आभा से) तुम भी धन्यवाद दे दो।

[आभा लजा कर मुँह फेर लेती है। अनूप का प्रवेश। आकर वह परिस्थिति देखता है और हक्काबक्का हो जाता है। नगेन्द्र उसे देखते ही उसके पास दौड़ जाता है और गले से लगाता है।]

नगेन्द्र—भई, मजे में रहे ? कहो, क्या समाचार है ?

अनूप—कुछ नहीं, मैं...मैं तुमलोगों को बधाई देने आया हूँ। मुबारक।

नगेन्द्र—धन्यवाद !

विद्या—(आभा से)—तुम भी कुछ कहो सखी।

[आभा उसे चिकोटी काटती है]

विद्या—उई !...[अनूप के पास जाकर] देखिये अनूपबाबू, बिगाड़ी भली लड़की मुझे चिकोटी काटती है।.....हाँ, तो आपका भी हृदय परिवर्तित हुआ या नहीं ?

अनूप—विद्या, मेरा हृदय परिवर्तित नहीं हो सकता। मैं कम्यूनिस्ट हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम चर्खे से यंत्रों को नहीं जीत सकोगी। मैं जानता हूँ इस बेईमान दुनिया में तुम प्रेम के सिद्धान्तों से कुछ नहीं कर सकोगी। मुझे मालूम है कि इन बेईमान पूँजीपतियों के हृदय में परिवर्तन लाने की शक्ति तुम्हारे अन्दर नहीं है। मैं जानता हूँ कि अत्याचारी अफसर तुम्हें धोखा देंगे और प्रेम के सिद्धान्तों से तुम उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकोगी। वे जनता को फिर धोखा देंगे, वे अपने असहयोग से

श्रीकृष्ण सिंह को फिर नीचा दिखलावेंगे। मैं किसी पर विश्वास नहीं करता। इस प्रपंची दुनिया में मुझे प्रेम के सिद्धान्तों पर विश्वास नहीं है। मैं कम्यूनिस्ट हूँ और कम्यूनिस्ट रहूँगा। मैं तुमलोगों को तुम्हारी जीत पर बधाई देता हूँ। एक कम्यूनिस्ट अच्छी बात को हमेशा अच्छा कहने के लिये तैयार रहेगा; मगर जिस तरह तुम अपना सिद्धान्त नहीं बदल सकती उसी तरह मैं भी अपना सिद्धान्त नहीं बदल सकता।

रामवृक्ष—अनूप !

अनूप—आप क्या कहना चाहते हैं ?

रामवृक्ष—तुम दुनिया को जितना कृतघ्न समझते हो, दुनिया वैसी कृतघ्न नहीं है।

अनूप—हो सकता है।

रामवृक्ष—मैं सरकारी अफसर हूँ। मैं कहता हूँ कांग्रेस अगर हमें माफ कर देगी तो हम भी काँग्रेस से सहयोग देकर दिखला देंगे कि जनता की सरकार कैसी होती है।

अनूप—आप ऐसा कर सकते हैं; लेकिन सभी अफसरों के लिये ऐसा करना कदापि सम्भव नहीं।

रामवृक्ष—क्यों ?

अनूप—क्योंकि वे कृतघ्नता की दुनिया में बसते हैं, बेईमानी और खुदगर्जी ही उनका पेशा है।

रामवृक्ष—खैर, तुम्हारा यही विश्वास है तो मेरा भी काम देख लेना।

अनूप—सारी दुनिया सामने है। अभी कल ही मालूम हो जायगा कि सरकारी अफसर काँग्रेस के प्रेम का कैसा बदला दे रहे हैं। नमस्ते

[प्रस्थान]

१२

[सड़क। नगेन्द्र एक दल का नेतृत्व करता हुआ आता है। दल गा रहा है :]

: कोरस :

हरेक तार साँस का बजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल।

नगेन्द्र—भाईयो, आज खुशी का पैगाम आया है, आज इस प्रान्त में कांग्रेस के मंत्रित्व ने अपना शासन-सूत्र सम्भाला है। मगर इससे यह न समझना कि हमारा काम पूरा हो गया। अभी ही तो वक्त आया है कि काँग्रेस के सिद्धान्तों को हम गाँव-गाँव में घर-घर पहुँचा दें।

१ आदमी—हमारे पास वस्त्र नहीं।

नगेन्द्र—काँग्रेस की मिनिस्टरी कोई फूलों की सेज नहीं है कि आज ही तुम्हारे दुख दूर हो जायँगे। अगर आज वस्त्र नहीं है तो कल भी वस्त्र नहीं था।

१ आदमी—तो हम क्या करें ?

नगेन्द्र—स्वतंत्र बनो—एकदम स्वतंत्र बनो। चर्खे को अपनाओ, तुम्हारे वस्त्रों के दुख दूर होंगे।···गाँव-गाँव में

फैल जाओ। सबको चर्खे का और ग्रामोद्योग का सन्देश सुना दो। सुना दो कि पहले स्वयं स्वतंत्र बनो तभी तुम पराधीनता के पाश से मुक्त हो सकते हो। आजाद हिन्दुस्तान में सभी व्यक्ति स्वतंत्र होगा।

२ आदमी—हम अन्न बिना मर रहे हैं।

नगेन्द्र—तुमने हल और कुदाल छोड़ दिया है, गाँवों में रहना छोड़ दिया है, शहरों में बाबू बनकर घूमते हो, तुम अन्न के बिना जरूर मरोगे। गाँवों में लौटो। परती जमीनों को अपनाओ। धरती पर अपना हक लिख दो। धरती अपनी छाती फाड़ कर तुम्हें अन्न देगी।

३ आदमी—हम हरिजन हैं। हमें कोई नहीं छूता।

नगेन्द्र—तुम हमारे भाई हो।

[गले से लगा लेना]

: कोरस :

हरेक तार साँस का बजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल !
हजारों आदमी का दल
हजारों औरतों का दल
हजारों बालकों का दल
तड़प-तड़प कर हैं विकल
नवीन जोश जिन्दगी जगाये चल
जगाये चल, जगाये चल, जगाये चल, !

हरेक तार साँस का बजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल !!

[गाते हुए सबका प्रस्थान]

दृश्यान्तर—

[एक किसान खेत में हल चलाता हुआ गा रहा है:]

मेरे खेत में हल चलता है
फाड़ कलेजा गड़ जाता है
तड़-तड़ धरती तड़काता है
राह बनाता बढ़ जाता है
मेरे खेत में हल चलता है
खून - पसीना चुचुआता है
मेरा तनमन सब खप जाता है
मिट्टी का तन नरमाता है
मेरे खेत में हल चलता है

दृश्यान्तर—

[एक ओर से मिलिटरी, दूसरी ओर से स्वयंसेवकों का दल मार्च करता और गाता हुआ आता है:—

:कोरस:

हरेक तार साँस का बजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल
सभी के तन गुलाम हैं
सभी के मन गुलाम हैं

सभी की गति गुलाम है
सभी की मति गुलाम है
गुलामियों के चिन्ह को मिटाये चल
मिटाये चल, मिटाये चल, मिटाये चल
हरेक तार साँस का बजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल

१ आदमी—एक हो !

२ आदमी—सारा भारतवर्ष एक हो !

३ आदमी—तूफानों से न डरो।

४ आदमी—बिजलियों से न डरो।

: कोरस :

गगन में बिजलियाँ चलें
पवन में बिजलियाँ चलें
लहर में बिजलियाँ चलें
डगर में बिजलियाँ चलें

अजेय आतम का बल दिखाये चल
दिखाये चल, दिखाये चल, दिखाये चल
हरेक तार साँस का बजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल,

[सम्मिलित भीड़ फट जाती है और मिलिटरीवाले मार्च करते एक ओर जाते हैं। तथा स्वयंसेवक दूसरी ओर जाते हैं]

दृश्यान्तर—

[एक देहाती पुरुष और एक देहाती स्त्री का नृत्य]

पुरुष का गाना—

जनम-मरन हम देखली सखिया कभी न ऐसन दिनवाँ रे
बितैली उमरिया लगभग साठ-पचपनवाँ रे
लागऽ है अन्धेर सखि, जब जा हियै बजरिया रे
रुपया के एक सेर जखनी खरिदऽ हियै अनजिया रे
घरे पिछुअरिया में परती है खेतवा, हाँ रे बलमुआँ हो।
ओहि में रे बगवा लगाय दे, हाँ रे बलमुआँ हो।
बगवा लगाय दे हो कुँअवाँ खनाय दे, हाँरे बलमुआँ हो।
कुअँवाँ से बगवा पटाए दे—हाँ रे बलमुआँ हो।

पुरुष का गाना—

बीसों बेरि बजरिया गेलिअई बुलसिंह संगे दुकनवाँ जान।
कोई नहीं देलकई पाँचो गज मरकिनवाँ जान।
कुतवो से बदतर डाँट हई बोले न दे हई बचनवाँ जान।
चढ़े नहिं दे हई कपड़ा के दुकनवाँ जान।
कपड़ा बिना रुकलइ सदिया और चुमवना जान।
कपड़ा बिना रुकलइ लाखों आज गवनवाँ जान।

स्त्री का गाना—

हाँ-रे बलमुआँ हो।

गाँव के बढ़इया से चरखा बनवाए दे—हाँ रे बलमुआँ हो
सुतब कतैतई मजेदार—हां रे बलमुआँ हो
चतुर बढ़इया से करघा बनवाए दे—हाँ रे बलमुआँ हो
सड़िया रे बुनैबइ सुन्दर पाढ़—हाँ रे बलमुआँ हो
खद्दर के धोती-कुरता खद्दर के टोपी—हाँ रे बलमुआँ हो
खदरे के चद्दर देबउ बनवाए—हाँ रे बलमुआँ हो

दृश्यान्तर :

[सभी लोगों का समूह मार्च करता हुआ और गाता चला जा रहा है।]

: कोरस :

हरेक तार साँस का बजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल

गरीब की गुहाओं में
अशक्त की भुजाओं में
स्वदेश की शिराओं में
विपत्ति आपदाओं में

दहाड़ते लहू का रव गुँजाये चल
गुँजाये चल, गुँजाये चल, गुँजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल

नयी उमंग से उभर
नये विचार से विचर
उथल-पुथल के काम कर
न डर, न डर, न डर, न डर

जमीन - आसमान को हिलाये चल
हिलाये चल, हिलाये चल, हिलाये चल

विरोध को, विवाद को
अनीति को, प्रमाद को
घने घिरे विषाद को
विषाक्त न्याय नाद को

स्वतंत्र इन्किलाब से हराये चल
हराये चल, हराये चल, हराये चल
हरेक तार सांस का बजाये चल
बजाये चल, बजाये चल, बजाये चल

[मार्च करता हुआ दल चला जा रहा है। एक पगली लड़की उनके चरण-चिह्नों पर फूल चढ़ाती आती है। वह दल चला जाता है। पगली लड़की गाती है:—]

बढ़ो तुम्हारे चरणों की ध्वनि नव-जीवन का गीत।
देख तुम्हारी शक्ति ज्योति वह शत्रु हुआ भयभीत॥

और तुम्हारी ललकारों में जीवन का उल्लास।
और तुम्हारी मुसकानों से खिला देश का हास॥

[देश की मिट्टी को उठा कर अपने सिर पर चढ़ाती है
और फिर माथा टेक कर प्रणाम करती है।]

यवनिका पतन